bible educational services

शिक्षक केलिए दिशा-निर्देश

बाइबल टाइम लेवल 1 & 2

B सीरीज़

पाठ 1-6

www.besweb.com

शिक्षक केलिए दिशा- निर्देश।

यह दिशा-निर्देश उन शिक्षकों केलिए प्रकाशित किए है जो बाइबल टाइम सिखाते है। इस पुस्तिका को लेवल 3 लगभग 11-13 के आयु के बच्छो को पठाने में इस्तमाल कर सकते है।

हर एक टिचिन्ग गाइड में वही बाइबल पद का अनुकरण किया है जो बाइबल टाइम पाठ में दिए गए है। बाइबल टाइम पाठ और गाइडलाइन्स साप्ताहिक आधार पर उपयोग करने केलिए बनाया गया है। आप्रैल के पाठ क्रिस्मस से सम्बन्धित है।

कई क्षेत्रों में A4 पाठ और दूसरे क्षेत्रों में A5 पुस्तिका को जिसमे 24 पाठ शामिल है असका उपयोग करते है। आम तौर पर शिक्षक A4 मासिक पाठ का वितरण करेंगे ओर एक हफ्तें में एक पाठ को विध्यालय, गिरिजाघर, या अपने घर ले जाकर पूरा करके वापस लौटाना चाहिए। हर महीने के अन्त में शिक्षक पाठ को इकट्ठा करके जाँचने के बाद जल्द ही लौटाना चाहिए।

आदर्शरूप में पुस्तिका इस्तमाल करते वक्त सत्र के अन्त में जाँच करने केलिए इकट्ठा करते है। हम समझ सकते है कि कई परिस्थितियों में यह असम्भव है। ऐसे स्थिति में पुस्तिका को कक्षा के दुसरे बच्चों में वितरण करके उन से जाँच करवाया जा सकता है। पुस्तिका के पीछे हर महीने का अन्क लिखने और बच्चों की प्रगति के बारे में टिप्पणी लिखने का स्थान दिए गए है। एक प्रमाण पत्र भी है जिसे अलग करके छः महीनों में प्राप्त किए कुल अन्क लिखकर बच्चों को देने है।

शिक्षक केलिए तैयारी

हम आदेशात्मक नही होने चाहते जिसकी वजह से शिक्षक को अपने विचारों और तरीको से सिखाने का अवसर न मिले। यह बाइबल टाइम सिखाने केलिए सिर्फ एक सूझाव है।

- **कहानी से सुपरिचित होना** - शिक्षकों को बाइबल कहानियों और उससे जुडे बाइबल टाइम पाठ से अच्छी तरह से सुपरिचित होना चाहिए। शिक्षक को पहले पाठ पूरा करना चाहिए। हर एक पाठ की दिशा-निर्देशों को ध्यान से पढकर नियोजन सहायता के रूप में भी इस्ततमाल करना चाहिए।
- **विषय को समझना** -हर एक पाठ के आरम्भ में अपने यह वाक्य देखा होगा - "हम सीख रहे हे कि" उसके बाद सीखने के दो उदेश्य भी दिए गए है जो हमे उम्मीद है कि शिक्षक के प्रस्तुति और बच्चे बाइलब टाइम को पूरा करने पर उन्हे समझ आऐंगे। सीखने का पहला उदेश्य है विषय के बारे में ज्ञान प्राप्त करना और दूसरा उदेश्य है बच्चे को इस ज्ञान के बारे में सोचने, प्रयोग करके अनुक्रिया देने केलिए प्रोत्साहन देना। यह निर्देशन पाठ में दिए गए मुख्य विषय सत्य का सूक्षम वक्तत्य है। इसे शिक्षक अपने पढाने और सीखने के अपने व्यक्तिगत मूल्यान्कन केलिए उपयोग कर सकते है।
- **परिचय कराना** - हर पाठ के आरम्भ में उन परिस्थितियों में बच्चों के अपने अनुभव के बारे में पूछकर शुरु करना चाहिए। बच्चों को पाठ का परिचय कराने केलिए कई तरीको का सुझाव दिए गए है। जिसके सहायता से कहानी की प्रारम्भ के बारे में बच्चे सम्वातात्मक चर्च कर सकेंगे।
- **पढाना**- कहानी की मुख्य सारांश हमने दिए है। हम यह नही चाहते की पढाते वक्त शिक्षक इसे देखे। हम चाहते है की शिक्षक इस पाठ से इतना परिचित हो ताकि मनेरन्जक और प्रेरणापद तरीके से बच्चों को वह सीखा पाऐंगे। शिक्षक यह चाहेंगे की बच्चे कहानी की मुख्य पाठ को समझे और उस कहानी को सीखने के बाद अनुक्रिया दे। कई प्रधान व्यख्यों को हम तिरछे अक्षरों में लिखे है।
- **सीखना** -हर एक कहानी में एक मुख्य पद दिए गए है। कई जगह दो पद दिए है। हम चाहते है की बच्चों को अक्सर मुख्य पद याद दिलाते रहे ताकि उन्हे बाइबल पदों के बारे में ज्ञान प्राप्त हो।
- **पूरा करे** - एक विध्यालय कि माहोल में बच्चो की सामर्थ्य और शिक्षक की तरह से दिए जाने वाले मदद के बारे में हमे पता होता है। कई बच्चों केलिए ज़रूरी है की शिक्षक उन्हे पाठ पढ के सुनाए। अन्य बच्चों स्वयं पढ सकते है। दोनों हाल में यह अच्छा होगा अगर बच्चों का ध्यान हम सवालों से सम्भन्धित निर्देशों के और खीच सके। अगर आप स्कूल से बाहर बाइबल टाइम सीखा रहे हो तो यह बहुत ज़रूरी है कि आप मदद केलिए मौजूद हो ताकि बच्चों को यह न लगे की यह एक बहुत ही मुश्किल काम या परीक्षा है। पढाते वक्त उसे मज़ेदार बनाना प्रोत्साहित करना और तारीफ करना अनिवार्य है।

- **याद करना**- पाठ को दोहराते वक्त पहेली या अभिनय द्वारा उसे मनोरंज़क बनाए ताकि बच्चों को वह हमेशा याद रहे।

1. मुख्य पद को सिखाना

पद को कागज़ या बोर्ड में लिखे और जैसे बच्चे उसे दोहरराते है पद से एक-एक पद करके निकाले ताकि अन्त में पूरा पद को निकाल दिया जाए और बच्चे उन्हे बिना देखे दोहराए।

2. मुख्य पद को परिचय कराने केलिए

A. बच्चों को दो झुण्ड में डालेः एक झुण्ड को कई अक्षर लिखे हुए परचियाँ दे और दुसरे झुण्ड को खाली परचे। बच्चे आपस में मिलकर उसे पूरा करे और सीखे।

B. सबसे पहले जो बच्चा बाइबल में यह पद ढूँढे वह जोर से उसे पढे।

समय योजना

क्रमः हर पाठ केलिए हम एक ही क्रम दिए है। लेकिन शिक्षक चाहे तो इच्छा अनुसार बदल सकते है।

1. प्रस्तुतीकरण और कहानी को सुनाना - लगभग 15 मिनट
2. मुख्य पद को पढाना - 5-10 मिनट
3. कार्य-पत्र को पूरा करना - 20 मिनट
4. सवाल-जवाब और दूसरे क्रियाकलाप - 5-10 मिनट

हमेशा यह कहावत याद रकनाः

"मुझे सुनाईए, मैं भूल सकता हूँ,
'मुझे दिखाईए, मैं याद रखूँगा,
मुझे शामिल करे, मैं सीख लूँगा।"

बाइबल टाइम पाठ्यक्रम

	लेवल 0 (प्री स्कूल) लेवल 1 (उम्र 5-7) लेवल 2 (उम्र 8-10)	लेवल 3 (उम्र 11-13)	लेवल 4 (उम्र 14+)
सीरीज़ A	1. सृष्टी 2. नूह 3. पतरस 4. पतरस- क्रूस 5. अब्राहम 6. अब्राहम 7. पतरस 8. पतरस 9. याकूब 10. प्रथम ईसाई 11. पौलूस 12. क्रिसमस की कहानी	1. सृष्टी 2. नूह 3. पतरस 4. पतरस- क्रूस 5. पतरस 6. अब्राहम 7. याकूब 8. प्रार्थना 9. पौलूस 10. पौलूस 11. पौलूस 12. क्रिसमस की कहानी	1. सृष्टी और पाप 2. उत्पत्ति 3. पतरस 4. पतरस- क्रूस 5. पतरस 6. अब्राहम 7. याकूब 8. मसीही जीवन 9. पौलूस 10. पौलूस 11. पौलूस 12. क्रिसमस की कहानी
सीरीज़ B	1. मसीह का प्रारम्भीक जीवनकाल 2. अलौकिक कर्म 3. बैतनिय्याह 4. क्रूस 5. दृष्टान्त 6. यूसुफ 7. यूसुफ 8. यीशु ने मिले लोग 9. मूसा 10. मूसा 11. मूसा 12. क्रिसमस की कहानी	1. दृष्टान्त 2. अलौकिक कर्म 3. बैतनिय्याह 4. क्रूस 5. प्रथम ईसाई 6. यूसुफ 7. यूसुफ 8. सुसमाचार के लेखक 9. मूसा 10. मूसा 11. मूसा 12. क्रिसमस की कहानी	1. दृष्टान्त 2. अलौकिक कर्म 3. बैतनिय्याह 4. क्रूस 5. प्रथम ईसाई 6. याकूब और परिवार 7. यूसुफ 8 प्रेरितों 2:42 आगे की और 9. मूसा 10. मूसा 11. व्यवस्था 12. क्रिसमस की कहानी
सीरीज़ C	1. दानियेल 2. और अलोकिक कर्म 3. यीशु ने मिले लोग 4. मसीह की मौत 5. रूत और शमुएल 6. दाऊद 7. दाऊद 8. यहोशू 9. एलिय्याह 10. एलिय्याह 11. योना 12. क्रिसमस की कहानी	1. दानियेल 2. यीशु ने मिले लोग 3. और अलोकिक कर्म 4. मसीह की मौत 5. रूत 6. शमूएल 7. दाऊद 8. यहोशू 9. एलिय्याह 10. एलिय्याह 11. परमेश्वर द्वारा उपयुक्त लोग (पुराना नियम) 12. क्रिसमस की कहानी	1. दानियेल 2. यीशु की कहावत 3. प्रभु की शक्ति 4. मसीह की मौत 5. रूत 6. शमूएल 7. दाऊद 8. यहोशू 9. एलिय्याह 10. एलिय्याह 11. पुराने नियम के और किरदार 12. क्रिसमस की कहानी

B1 कहानी 1

मरियम और यूसुफ मन्दिर में - यह कहानी अपने पुत्र के लिए पमेश्वर को "धन्यवाद" देने के बारें में हैं।

	हम सीख रहे हैं कि: 1. बच्चा यीशु परमेश्वर का उद्धार होने के लिए पैदा हुआ था। 2. अपने पुत्र को उद्धारकर्ता बनाने के लिए हमें परमेश्वर से धन्यवाद कहना चाहिए। **मुख्य पद :** ***लूका 2:30*** **बाइबल अनुभाग :** ***लूका 2: 22-38***
पहचान कराने	उपहार प्राप्त करने के बारे में चर्चा करें। बच्चों से उन उपहारों के बारे में बताने को कहे जिन्हे मिलने पर उन्हें सचमुच ख़ुशी मिली। किसी भी उपहार, चाहे कितना भी छोटा हो उसके लिए भी "धन्यवाद" कहने के महत्व के बारें में बताएं। आज की कहानी में हम उन लोगों से मिलते हैं जो परमेश्वर के महानतम उपहार - प्रभु यीशु, के लिए आभारी थे।
सिखाने	1. आज मरियम और यूसुफ के लिए एक खास दिन था। परमेश्वर को धन्यवाद देने के लिए वे बालक यीशु को यरूशलेम के मंदिर ले आए थे। ***(लूका 2: 22-24)*** 2. जब वे वहां थे एक बूढ़ा आदमी शमौन वहां आया। वह एक उद्धारकर्ता भेजने का परमेश्वर की योजना के बारे में जानता था। दरअसल उन्हें एक अद्भुत वादा दिया गया था कि मसीह से मिलने के पहले उनका मृत्यु नहीं होगा। उसी दिन पवित्र आत्मा ने मरियम और यूसुफ से मिलने के लिए शमौन को निर्देशित किया था। शमौन को पता था कि इस दुनिया में यह बालक क्या बदलाव लाएंगे। वह समझता था कि यीशु कितना अनमोल उपहार है। *बालक को गोद में ले कर परमेश्वर का धन्यवाद देते वक्त शमौन की भावनाओं के बारें में चर्चा करें।* ***(लूका 2: 25-35)*** 3. हन्ना नामक एक बूढ़ी महिला ने भी बालक यीशु को मरियम और यूसुफ के साथ मिला। उसने भी यीशु के लिए परमेश्वर को धन्यवाद दिया और वह सभी से यीशु के बारे में बात करने लगी। ***(लूका 2: 36-38)*** *हन्ना की तरह, हमें भी दूसरों से यीशु की सुसमाचार के बारे में बताना चाहिए।* *कितने लोगों ने मंदिर में "धन्यवाद" दिया? चार लोगों के बारे में हम जानते हैं, शायद और भी लोग थे।* *हमे भी प्रभु यीशु के लिए परमेश्वर का आभार होना जरूरी है। शमौन हमेशा भविष्य में यीशु के जन्म की प्रतीक्षा करता था। हम भी अतीत में देखकर यीशु के जन्म और उद्धारकर्ता बनकर हमारे पापों के प्रति क्रूस पर मरने के लिए आभारी होना चाहिएं। भौतिक उपहारों की तुलना में परमेश्वर के उपहार का महत्व पहचानने के लिए बच्चों को प्रोत्साहित करें। और जो कुछ भी परमेश्वर ने किया उसके लिए व्यक्तिगत रूप से परमेश्वर को धन्यवाद देने बच्चों को चुनौती दें।* बाइबल टाइम पाठ को पूरा करें
सीखने	मुख्य पद को सिखाये और व्याख्या कीजिए। ***लुका 2:30*** समझाओ कि ये शब्द शमौन की कृतज्ञता प्रार्थना का हिस्सा हैं। उद्धार वो है जो प्रभु यीशु हमारे पापों को मिट ाने पर हमें देता है।
याद करने	कहानी को संशोधित करने के लिए बच्चों को निम्नलिखित प्रश्न पूछें: 1. मंदिर कहाँ था? 2. मरियम और यूसुफ यीशु के साथ क्यों थे? 3. वो बूढ़ा आदमी कौन हैं जो उन के पास आया था? 4. शमौन को दिया गया वादा क्या था? 5. वह बूढ़ी कौन थी जिसने यीशु के लिए धन्यवाद दिया था? 6. अपने आँखों से बालक यीशु को देखने पर हन्नाह ने क्या किया? 7. शमौन और हन्ना के उदाहरण से हम क्या सीख सकते हैं? 8. बाइबल कि किस किताब में हम शमौन और हन्ना के बारे में पढ़ते हैं?

B1 कहानी 2

नासरत में बड़ा होना - यह कहानी यीशु के बचपन के बारे में है

	हम सीख रहे हैं कि: 1. एक बालक के रूप में यीशु ने दिखाया कि वह परमेश्वर का बेटा था। 2. आज्ञाकारी होने में यीशु के उदाहरण का पालन करना आवश्यक है। **मुख्य पद :** ***लूका 2: 40*** **बाइबल अनुभाग :** ***लूका 2: 39-52***
पहचान कराने	अपने माता-पिता से अलग होने या लापता हो जाने के बारे में बात करें। यह कैसे/कहाँ हुआ? उस समय माता-पिता के भावनावों के बारे में चर्चा करें। घर से दूर यात्रा करने की अनुभव के और इसमें शामिल सभी उत्साह के बारे में बात करें। समझाओ कि आज की कहानी में मरियम और यूसुफ ने यीशु को घर से दूर एक विशेष कार्यक्रम के लिए ले गया था।
सिखाने	1. यीशु फसह का उत्सव मनाने के लिए अपने माता-पिता के साथ यरूशलेम गए थे। *यरूशलेम से नासरत तक 70 मीलों की कठिन सफर बच्चों को समझाने के लिए किसी स्थानीय शहर तक की यात्रा से तुलना करें। बच्चों को समझाएं की उन दिनों यह दूरी वे पैदल जाया करते थे। इस बात पर चर्चा करें कि 12 साल की यीशु कितना उत्साह में हुए होंगें - वहां का भीड़, उसके दोस्त, इमारतें और मंदिर में जाने की अवसर जहाँ शिक्षक यीशु के पिता - परमेश्वर के बारे में बात करते थे।* ***(लूका 2:42)*** 2. घर लौटते हुए जब वे एक दिन का सफर कर चुके थे अचानक मरियम और यूसुफ़ को एहसास हुआ कि यीशु उनके साथ नहीं है। *उन्होंने भीड़ में उसे कैसे ढूंढा होगा और न मिलने पर जब वे यरूशलेम वापस जाने का फैसला लिया उस वक्त की उनकी भावनाओं पर चर्चा करें।* ***(लूका 2: 43-45)*** 3. तीन दिन बाद उन्होंने मंदिर में उपदेशकों के बीच बैठे हुए यीशु को पाया। *उनके राहत का वर्णन करें*। जब उपदेशकों को सुनकर प्रश्न पूछते यीशु को लोगों ने देखा तो परमेश्वर के बारें में उनके ज्ञान पर सब चकित हुए। मरियम और यूसुफ भी आश्चर्यचकित थे। *मरियम और यीशु के बीच बातचीत बच्चों को सुनाकर व्याख्या कीजिए की कैसे एक बालक होकर भी वे अपने पिता के घर (मन्दिर) में उनका काम कर रहा था।* मरियम और यूसुफ को यीशु की बातें पूरी तरह से समझना मुश्किल था। ***(लूका 2: 46-50)*** 4. इस के बाद मरियम और यूसुफ के साथ यीशु नासरत वापस चला गया। वह हर तरह से अपने माता पिता और परमेश्वर के लिए आज्ञाकारी था और उन्हें हमेशा प्रसन्न करता था। *बाइबल हमें सिखाते है कि हमें अपने माता-पिता के लिए आज्ञाकारी होना चाहिए।* **(इफिसियों 6:1)** *आज्ञाकारी होने से हम यीशु के उदाहरण का अनुसरण कर रहे हैं।* बाइबल टाइम पाठ को पूरा करें
सीखने	मुख्य पद को सिखाये और व्याख्या कीजिए। ***लूका 2: 40*** समझाओ कि यह पद में यीशु के बढ़े होने के तौर-तरीके के बारें में बताए गए हैं। हम भी ऐसे बढ़े हो सकते हैं। परमेश्वर चाहता है कि हम उससे प्यार करके उनकी सेवा करे।
याद करने	**पूछें कि निम्नलिखित वाक्य सही है या गलत हैं:** 1. फसह का उतसव यरूशलेम में था। 2. इस कहानी में यीशु 10 साल का था। 3. मरियम और यूसुफ को एक दिन के बाद यीशु को मिला। 4. यीशु एक रिश्तेदार के घर में था। 5. मरियम ने यीशु के कहा कि वे चिंतित थे। 6. यीशु अपने पिता के काम कर रहा था। 7. परमेश्वर यीशु का पिता है। 8. यीशु नासरत वापस जाकर मरियम और यूसुफ का आज्ञापालन किया।

B1 कहानी 3

यरदन नदी में बपतिस्मा - यह कहानी यूहन्ना के द्वारा यीशु की बपतिस्मा लेने के बारे में है।

	हम सीख रहे हैं कि: 1. यीशु पाप रहित था और हमेशा अपने पिता को प्रसन्न करता था। 2. हम पापी हैं और हमारे पाप का पश्चाताप करने की आवश्यकता है। **मुख्यपद :** ***लूका 3:22*** **बाइबल अनुभाग :** ***लूका 3:1-22***
पहचान कराने	उन व्यक्तियों के बारें में चर्चा करे जो एक भीड़ को आकर्षित कर सकतेहैं, जैसे कि एक शाही आगंतुक, राजनेता, बनिया या सड़क में मनोरंजन करनेवाला व्यक्ति।।भीड़ में हर कोई उन्हें देखना या सुनना चाहता हैं। जब यूहन्ना ने यरदन नदी किनारे धर्मोपदेश देने शुरू किया तब भी स्थिति विभिन्न नहीं था। एक भीड़ इकट्ठे हुए यह सुनने के लिए की रेगिस्तान में रहते यह असाधारण दिखनेवाला आदमी क्या कह रहा था। ***(मत्ती 3:4)***
सिखाने	1. यूहन्ना एक भविष्यद्वक्ता था। इसका मतलब यह है कि परमेश्वर ने यूहन्ना को एक महत्वपूर्ण संदेश दिया था। उसने लोगों से कहा कि वे पापी हैं और उन्हें अपने गलत कामों केलिए पछतावा करके उसे दो हराना नहींचाहिए। फिर सब लोगों को यरदन नदी में डुबा कर बपतिस्मा दिया। इससे पता चला कि वे वास्तव में अपने तरीके बदलना चाहते थे। ***(लूका 3:2,3,7)*** *यदि बच्चों ने एक ईसाई धर्म का बपतिस्मा देखा है, तो उनके अनुभव कोइ ससे जोड़िए। समझाओ कि हमें भी अपने पापों केलिए पश्चाताप करने की ज़रूरत है।* 2. लोग अभी भी यूहन्ना के बारें में अनिश्चित थे। क्या वही था जिसे परमेश्वर ने भेजने का वादा किया था? यूहन्ना ने समझाया कि उससे भी शक्तिमान बाद में आनेवाला था। ***(लूका 3: 15,16)*** *वह कौन हो सकता था?* 1. फिर एक दिन यीशु ने बाकी लोगों के साथ आकर बपतिस्मा लिया। बपतिस्मा लेने से पहले यीशु को क्या करने की ज़रूरत नहीं थी? *यह तथ्य पर चर्चा करें की यीशु सभी से अलग था, वह पापरहित था और उन्हें पश्चाताप करने की जरूरत नहीं थी।* लेकिन यीशु यह दिखाना चाहता था कि वह हमारे जैसे साधारण मनुष्य हैं और अपने पिता परमेश्वर की आज्ञा मानना चाहता था। यीशु के बपतिस्मा के बाद कुछ अद्भुत कार्य हुआ। पवित्र आत्मा ने कबूतर के रूप में उसपर उतरा और यह आकाशवाणी हुई की यीशु परमेश्वर का प्रियपुत्र है और परमेश्वर उससे प्रसन्न हैं। ***(लूका 3:21,22)*** *परमेश्वर यीशु से प्रसन्न क्यों थे?* *1. यीशु की तरह परमेश्वर को प्रसन्न करना हमारे लिए संभव नहीं है। लेकिन परमेश्वर प्रसन्न होता हैं जब हम वाकई हमारे पापों केलिए क्षमा मांगकर उसके लिए जीवित रहने का चयन करते है।* बाइबल टाइम पाठ को पूरा करें
सीखने	2. मुख्य पद को सिखाये और व्याख्या कीजिए। ***लूका 3:22*** बच्चों से सरलप्रश्न पूछें यह जांचने केलिए कि क्या वे इसके संदर्भ को समझते हैं की नहीं।
याद करने	**कहानी को संशोधित करने के लिए बच्चों को निम्नलिखित प्रश्न पूछें:** 1. यूहन्ना उपदेश कहाँ देर हा था ? 2. यूहन्ना को अपना संदेश कहाँ से मिला? 3. यूहन्ना ने लोगों को पश्चाताप करने के लिए कहा। इसका क्या मतलब है? 4. जो लोग पश्चाताप करते हैं, उन्हें यूहन्ना ने क्या किया? 5. यूहन्ना ने उसके बाद आनेवाले उस व्यक्ति का वर्णन कैसे किया? 6. यीशु क्या चाहता था की यूहन्ना करें? 7. यीशु के बपतिस्मा दूसरों से अलग कैसे था? 8. हम परमेश्वर को किस प्रकार खुश कर सकते हैं?

B1 कहानी 4

मरुभूमि में परीक्षा - यह कहानी पाप से 'न' कहने के बारे में है

	हम सीख रहे हैं कि: 1. प्रभु यीशु ने कभी पाप नहीं किया। 2. परीक्षा में वह हमारी सहायता करने के लिए सक्षम है। **मुख्य पद :** ***लूका 4:8*** **बाइबल अनुभाग:** ***लूका 4: 1-13***
पहचान कराने	बच्चों को उनकी स्थिति से संबंधित एक परीक्षा/प्रलोभन की एक उदाहरण दें। एक व्यावहारिक स्तर पर प्रलोभन से बचने के बारे में बात करें। आज हम सीखने जा रहे हैं कि अपने परीक्षा के समय प्रभु यीशु ने क्या किया था।
सिखाने	1. यीशु के बपतिस्मा के बाद पवित्र आत्मा ने उसे मरुभूमि में ले गया। *40 दिन मरुभूमि कि अनुभव के बारें में चर्चा करें - गर्मी, सूखापन, एकांत।* ***(लूका 4:1)*** 2. यीशु कुछ खाया नहीं था, इसलिए वह भूखा था। सबसे अधिक उन्हें खाने की जरूरत था। *शैतान ने यीशु को क्या सलाह दिया।* रोटी पाने के लिए यह कितना आसान तरीका हो सकता था। लेकिन यीशु ने परमेश्वर के वचन से एक पद का उपयोग किया जिसमे कहा गया था कि शैतान का प्रलोभन गलत था। ***(लूका 4:3,4)*** 3. शैतान फिर यीशु के पास आया और उसे एक उच्च पर्वत ले गया जहां से वह जगत के सारे राज्यों को देख सकता था उसने कहा की अगर यीशु ने उसका प्रणाम किया थो ये सब उसका होंगा। यीशु ने उत्तर दिया, 'लिखा हैः 'तू प्रभु अपने परमेश्वर को प्रणाम कर ; और केवल उसे को उपासना कर।' फिर दूसरी बार, यीशु ने शैतान कि विचार को गलत स्थापित करने के लिए बाइबल के वाक्यों का इस्तेमाल किया था। ***(लूका 4: 5-8)*** 4. आखिरकार शैतान ने यीशु को यरूशलेम कि मंदिर में ले जाकर कंगूरे पर खड़ा किया। उसने उनसे कहा कि अगर वह परमेस्वर का पुत्र था तो वह खुद को वहां से नीचे गिरा दे क्योंकि उसे चोट नहीं पहुंचेगा। वह यीशु को अपनी शक्ति दिखाने के लिए लालच दे रहा था। लेकिन यीशु जानता था की यह गलत है और बाइबल के वाक्यों का उपयोग करके शैतान को भी यह बताया। उस समय शैतान ने यीशु को अकेला छोड़ दिया। ***(लूका 4:9-13)*** *आपको क्या लगता है कि शैतान ने उसे क्यों छोड़ दिया होगा? क्या वह सफल रहा? यीशु ने परीक्षाओं पर कैसे जीत हासिल किया?* *5. यह बताते हुए समाप्त होता है कि प्रभु यीशु कभी पाप नहीं किया। यीशु शैतान से शक्तिशाली है। उसने परमेश्वर के वचन का उपयोग करके शैतान को दिखाया की वे परमेश्वर के लिए आज्ञाकारी है। अगर हम प्रभु यीशु से संबंध रखते हैं तो हमें गलत बातों को 'न' बोलने के लिए वे मदद करेगें। अगर यीशु के तरह हम भी परमेश्वर के वचन से सुपरिचित है तो हमे भी सही काम करने के लिए उसका उपयोग कर सकते हैं।* बाइबल टाइम पाठ को पूरा करें
सीखने	मुख्य पद को सिखाये और व्याख्या कीजिए। ***(लूका 4:8)*** पूछें कि क्या बच्चों को इस कविता के संदर्भ को याद है। यह किसने कहा?और किससे कहा गया था? यीशु ने इन विशेष शब्दों का प्रयोग क्यों किया?
याद करने	B1 में जो कुछ भी प्रभु यीशु के बारे में कहा गया हैउसके बारे में बच्चों से सवाल पूछिए। शिक्षक एक चार्ट पर अपने विचार लिख सकते है और बच्चे छोटे समूह में इसके बारें में चर्चा कर सकते है।

B2 कहानी 1

यीशु ने पानी को दाखरस में बदल दिया - यह कहानी यीशु एक शादी में भाग लेने के बारे में है।

	हम सीख रहे हैं कि: 1. यीशु ने यह पहला आश्चर्यकर्म किया क्योंकि वह परमेश्वर का पुत्र है। 2. इस कहानी के नौकरों की तरह हमें भी यीशु की आज्ञा का पालन करना चाहिए। **मुख्य पद : *यूहन्ना 2: 5*** **बाइबल अनुभाग : *यूहन्ना 2: 1-11***
पहचान कराने	आपकी संस्कृति में शादी कैसे होता है, इसके बारे में बात करें और बच्चों को अपने अनुभवों को साझा करने दें। शादी के कुछ योजनाएं में यदि कुछ गड़बड़ी हो गईं तो क्या होगा? एक या दो उदाहरणों का सुझाव दें। आज की कहानी में प्रभु यीशु, उनके चेले और उनकी मां मरियम काना में एक शादी में मेहमान थे। ***(यूहन्ना 2:1,2)***
सिखाने	1. *दृश्य का वर्णन करें - सन्तुष्ट , ख़ुशी से बात करते और हँसते हुए मेहमान, स्वादिष्ट भोजन, हर कोई शादी का आनंद ले रहे है।* लेकिन फिर मरियम को एहसास हुआ कि कुछ समस्या थी। दाखरस घट गया था। *उस समय दूल्हा और दुल्हन को कैसे महसूस हुआ होगा?* मरियम को पता था कि क्या करना है। सीधे जाकर उसने यीशु से अपने प्रश्न को बताया। समझाओ कि यीशु सबसे अच्छा दोस्त है जिसके पास हम अपनी कोई भी समस्या को ले जा सकते हैं। *हम उससे प्रार्थना कर सकते हैं।* फिर मरियम नौकरों के पास गई और कहा, 'जो कुछ वह तुम से कहे, वही करना।' मरियम जानती थी कि यीशु मदद करने में सक्षम होगा। उसे उस पर पूरा भरोसा थी। ***(यूहन्ना 2: 3,4)*** 2. *समझाओ कि वहां छह बड़े पत्थर के मटके थे। जिसमे भरे पानी खाना पकाने या लोग धोने के लिए इस्तेमाल करते थे।* यीशु ने नौकरों से मटकों में पानी भरने के लिए कहा। और फिर कुछ निकालकर भोज के प्रधान के पास ले जाने को कहा। समझाओ कि ऐसा करना उन के लिए बड़ा ही अजीब था क्योंकि निश्चित रूप से यह पानी था। *लेकिन उन्होंने यीशु की आदेश का पालन किया और उन्हें आश्चर्यचकित करके पानी* अब दाखरस में बदल गया था। और वे सब सहमत थे कि पहले दिए दाखरस की तुलना में यह बेहतर दाखरस था। ***(यूहनना 2: 6-10)*** *प्रभु यीशु हमेशा सर्वश्रेष्ठ देता है!* 3. *समझाओ कि यह एक आश्चर्यकर्म था। यीशु ने जो किया, वह कोई नहीं कर सकता। वे ऐसा कर पाया क्योंकि वह परमेश्वर का पुत्र है, जो सभी चीजों का सृष्टिकर्त्ता है।* 4. *यह बहुत ही महत्वपूर्ण था कि नौकरों ने यीशु की आज्ञा मानी। बच्चों से पूछे की अगर नौकरों ने आज्ञा का उल्लंघन किया तो क्या होता। हमारे समस्या (हमारे पाप) के बारें में चर्चा करें। प्रभु यीशु ही हमारी समस्या का हल है क्योंकि वह हमारे पाप का दण्ड अपने ऊपर ले कर क्रूस पर अपना प्राण दिया। लेकिन हमारे पापों को क्षमा करके हमारे जीवन में वह आश्चर्यकर्म तब ही कर सकता है जब हम उनके ऊपर भरोसा करें।* बाइबल टाइम पाठ को पूरा करें
सीखने	मुख्य पद को सिखाये और व्याख्या कीजिए। ***यूहन्ना 2:5*** कहानी का संदर्भ को व्याख्या करें। सुनिश्चित करें कि बच्चों को पता है कि 'वह' कौन है।
याद करने	कहानी को संशोधित करने के लिए बच्चों को निम्नलिखित प्रश्न पूछें: 1. शादी कहाँ थी? 2. शादी के कुछ मेहमानों को नाम दें। 3. किसने नौकरों से यीशु की सुनने के लिए कहा? 4. यीशु ने नौकरों को क्या करने को कहा? 5. कितने मटके थे? 6. जब नौकरों ने जब मटके के पानी को बाहर निकाला तो क्या हुआ? 7. किस विषय में सभी लोग सहमत थे? 8. यह आश्चर्यकर्म यीशु कैसे कर पाया? 9. हमारे जीवन में समस्या क्या है? 10. हम नौकरों से क्या सीख सकते हैं?

B2 कहानी 2

यीशु एक बीमार लड़के को चंगा करता है - यह कहानी यीशु की शक्ति के बारे में है

	हम सीख रहे हैं कि: 1. यीशु को चंगा करने की शक्ति थी क्योंकि वह परमेश्वर का पुत्र है। 2. यीशु चाहता है की उस राजा का कर्मचारी की तरह हम भी उन पर भरोसा करें। **मुख्य पद : *यूहन्ना 4:50*** **बाइबल अनुभाग: *यूहन्ना 4:46-54***
पहचान कराने	पिछले हफ्ते की कहानी की समीक्षा करें। शादी में क्या हुआ था? यह कहाँ हुआ? इस बात के बारे में बात करें कि इस आश्चर्यकर्म की खबर काना के चारों ओर कैसे फैला।
सिखाने	1. कुछ समय बाद प्रभु यीशु वापस काना लौट आए। पास के कफरनहूम शहर में राजा का एक कर्मचारी ने यह सुना कि यीशु काना में था। काश यीशु उसे मदद कर सकता। उसका बेटा बहुत बीमार था। राजा का कर्मचारी ने सोचा कि अगर यीशु अपने घर आया तो उसका बेटा चंगा हो जाएगा। ***(यूहन्ना 4:47)*** 2. राजा के कर्मचारी ने यीशु को खोजने के लिए 20 मील की यात्रा की। *कल्पना करो कि वह कैसा महसूस कर रहा होगा - थका हुआ, चिंतित, बेताब।* उसने यीशु से उसके साथ वापस आने के लिए विनती की। जब उसने उसे अपने बेटे के बारे में यीशु को बताया तो यीशु ने उसे घर लौटने के लिए कहा और कहा कि उसका बेटा जीवित रहेगा। यीशु उसके साथ आने वाला नहीं था। प्रतिबिंबित करे की वह अपना प्रतिक्रिया कैसे व्यक्त कर सकता था और समझाओ की उसने परमेश्वर के कहने पर विश्वास किया। *उसने परमेश्वर पर इतना भरोसा किया कि वह जानता था कि यीशु को अपने बेटे को ठीक करने के लिए इतनी दूर यात्रा करने की जरूरत नहीं थी।* ***(यूहन्ना 4: 47-5)*** *समझाओ कि यीशु चाहता है की हम भी इस प्रकार उस पर विश्वास करें। हम उसे देख उनकी आवाज सुन नहीं सकते हैं, लेकिन वे अपने वचन - बाइबल में वादा करता है, कि वह हमें प्यार करता है और हमें क्षमा करना चाहता है।* 3. जब वह वापस अपने घर जा रहा था यात्रा के भींच में हैं उन्हें अच्छी खबर मिली। *बच्चों को अनुमान लगाने को कहें कि वह खबर क्या था।* जी हाँ, उसका बेटा चंगा हो गया था। और जब उसने पूछा कि यह कब हुआ, तो उसने पाया कि यह उसी वक्त था जब यीशु ने उसे बताया था कि उसका बेटा जीवित रहेगा। पूरे परिवार को कितनी खुशी हुई होगी? उन सभी को यकीन हुआ कि यीशु वास्तव में परमेश्वर का पुत्र था। ***(यूहन्ना 4: 51-53)*** 4. हमें भी यह विश्वास करने की आवश्यकता है कि यीशु परमेश्वर का पुत्र है। वह चाहता है कि हम उस पर हमारा भरोसा को प्रकट करें। तब सही अर्थों में हम भी सचमुच खुश हो सकते हैं। बाइबल टाइम पाठ को पूरा करें
सीखने	मुख्य पद को सिखाये और व्याख्या कीजिए। ***(यूहन्ना 4: 50)***
याद करने	कहानी को संशोधित करने के लिए बच्चों को निम्नलिखित प्रश्न पूछें: 1. राजा के कर्मचारी का समस्या क्या था? 2. वह यीशु को कहाँ मिला? 3. उसे कितनी दूर यात्रा करना होगा? 4. यीशु ने उसे क्या करने के लिए कहा? 5. घर वापस जाने के रास्ते में वह किससे मिले? 6. वे क्या खबर ले आई थी? 7. बेटा कब चंगा हुआ था? 8. उचित शब्दों से रिक्त स्थान को भरें - राजा के कर्मचारी ने यीशु पर पूरी तरह से ..... किया।

B2 कहानी 3

यीशु और बरतिमाई - यह कहानी एक अंधे व्यक्ति को दृष्टि मिलने के बाद यीशु का अनुगमन करने के बारे में है।

	हम सीख रहे हैं कि: 1. प्रभु यीशु बरतिमाई की मदद करना चाहता था और उसके जीवन को बदलने की शक्ति भी था। 2. यीशु हमारे पापों को दूर करके हमारे जीवन को बदलना चाहता है। **मुख्य पद :** ***मरकुस 10: 52*** **बाइबल अनुभाग :** ***मरकुस 10: 46-52***
पहचान कराने	दृष्टि का अद्भुत उपहार के बारे में बात करें - रंग देखने, स्थानों का आनंद लेने, लोगों को पहचानना, किताबें पढ़ना, खेल खेलना, टीवी देखना आदि संवेदनात्मक रूप से चर्चा करें कि आप जिस समाज में रह रहे हैं, किसी अंधे व्यक्ति को आपके समाज में रहना कितना मुश्किल हो सकता है। समझाओ कि यीशु के समय में भी एक अंधे व्यक्ति के लिए जीवन कितना कठिन होता था।
सिखाने	1. बरतिमाई एक अंधा आदमी था जो जेरिको में रहता था। उसके लिए, हर दिन एक जैसे ही था - जीवित रहने के लिए सड़क के किनारे भीख माँगना। *लेकिन आज का दिन विभिन्न था। वहां के कोलाहल, भीड़ और बरतिमाई का यह जानना कि यीशु वहाँ पहुँच रहा था, इन सब का वर्णन करें।* अचानक बरतिमाई बहुत उत्साहित हुआ क्योंकि उसने यीशु के कामों के बारे में सुना था। वह क्या चाहता था कि यीशु उसके लिए करें, इसके बारें में आपका विचार क्या है? यीशु से मदद के लिए बरतिमाई ऊँचे स्वर में चिल्लाना शुरू किया। कुछ लोग उससे ख़फ़ा में थे और उसे चुप रहने के लिए कहा था लेकिन उन्होंने ओर जोर से चिल्लाया। ***(मरकुस 10: 46-48)*** *समझाओ कि वह सही काम कर रहा था क्योंकि यीशु ही केवल एक व्यक्ति था जो उसे दृष्टि दे सकता था। प्रभु यीशु ही एकमात्र है जो हमारे पापों को क्षमा कर सकता है। जैसे ही उसे को यीशु से मिलने की जरूरत थी हमें भी यीशु के साथ मिलना जरूरी है।* 2. तब यीशु ने ठहरकर किसी से बरतिमाई को बुलाने को कहा। *वर्णन करें कि उसने कैसे जवाब दिया। बरतिमाई अब कैसे महसूस कर रहा होगा?* यीशु ने उसकी इच्छा पूछा और उसने कहा कि वह देखना चाहता है। यीशु ने कहा की वह जा सकता है क्योंकि उसके विश्वास ने उसे चंगा कर दिया था। तुरंत ही वह देखने लगा। *बच्चों से पूछो कि बरतिमाई ने उसके चारों ओर क्या देखा होगा? उसकी भावनाओं और जवाब के तौर पर मार्ग में यीशु के अनुगमन करने के बारें में वर्णन करें।* ***(मरकुस 10:49-52)*** *3. बरतिमाई वह दिन कभी नहीं भूलेंगे जब वह यीशु से मिले थे। यीशु ने उसके लिए एक अलौकिक कर्म किया था और उसका जीवन बिलकुल बदल गया था। समझाओ कि प्रभु यीशु हमारे पापों को दूर कर के हमारे जीवन रूपांतरित करना चाहता है। जब हम उसके पास आकर उस पर भरोसा करते हैं तो हम बरतिमाई के तरह हम भी यथार्थ में खुशी पाएंगे।* बाइबल टाइम पाठ को पूरा करें
सीखने	मुख्य पद को सिखाये और व्याख्या कीजिए। ***मरकुस 10:52*** *समझाओ कि बरतिमाई का 'विश्वास' प्रभु यीशु पर उसका भरोसा था। बरतिमाई जानता था कि उनका दृष्टि वापस देने की शक्ति यीशु को था। यीशु चाहता है कि हम भी उस पर विश्वास करें।*
याद करने	निम्नलिखित कथन सही है या गलत: 1. बरतिमाई काना में था। 2. वे अंधा था। 3. वह कुछ भी बोल नहीं सका। 4. यीशु को देखने के लिए बहुत सारे लोग थे। 5. जब लोगों ने बरतिमाई से चुप रहने को कहा तो वह निःशब्द हो गया। 6. यीशु उसे सुनना नहीं चाहता था। 7. बरतिमाई उठ कर यीशु के पास आ गया। 8. भीड़ उसे यीशु के पास आने से रोखा। 9. बरतिमाई ने यीशु से मिलने के बाद भीख मांगना शुरू किया। 10. प्रभु यीशु हमारे जीवन में भी अलौकिल कर्म करना चाहता हैं।

B2 कहानी 4

यीशु कोढ़ के रोगियों को चंगा करता है - यह कहानी यीशु को धन्यवाद देने के बारें में है।

	हम सीख रहे हैं कि: 1. कोढ़ी रोगियों ने यीशु की आज्ञा मानी और वे चंगा हो गए। 2. प्रभु यीशु चाहता है कि हम उन सभी के लिए धन्यवाद करें जो उन्होंने हमारे लिए किया है। **मुख्य पद :** ***भजन संहिता 107: 21*** **बाइबल अनुभाग :** ***लूका 17:11-19***
पहचान कराने	कृतज्ञ होने के बारे में बात करें। बच्चों से उन चीजों कि एक सूची लिकने को कहें जिस के लिए वे हर दिन आभारी हो सकते हैं (जैसे भोजन, पानी, घर, सेहत, परिवार, विद्यालय) समझाओ कि परमेश्वर सभी अच्छी चीजों का दाता है। हर दिन हम एक आभारी दिल से शुरू करना चाहिए और उन लोगों को भी याद करना चाहिए जो कम भाग्यशाली हैं।
सिखाने	1. आज की कहानी दस लोगों के बारें में है जो एक कठिन जीवन जी रहे थे। *समझाएं कि कैसे वे कोढ़ से प्रभावित थे - बाइबल टाइम 1 या 2 का उपक्रम देखें।* 2. मगर एक दिन कुछ रोमांचक हुआ। यीशु उस क्षेत्र में था जहां वे रहते थे। हालांकि कोढ़ियों को किसी के पास जाने की अनुमति नहीं थी। लेकिन वे दूरी से उसे देख सकते थे और उन्हें पता था कि यीशु उसकी मदद कर सकता था। उन्होंने दूर खड़े होकर ऊँचे शब्द में चिल्लाया, 'हैं यीशु, स्वामी, हम पर दया कर !' ***(लूका 17: 11-13)*** 3. यीशु ने सुना और कहा, 'जाओ, और अपने आपको याजकों को दिखाओ। *'समझाओ कि प्रभु कि व्यवस्था में यह कहा गया है की जो कोढ़ से चंगा होता है उसे स्वयं याजकों के सामने पेश करना चाहिएं।* पुरुषों को एहसास हुआ कि यीशु उन्हें चंगा करने जा रहा है इसलिए उन्होंने एक बार प्रभु की आज्ञा मानी और निकल पड़े। और जैसे ही वे अपने रास्ते पर थे, अचानक उनकी कोढ़ गायब हो गई। यीशु ने उन्हें चंगा किया था। *उस क्षण में उनकी भावना क्या थी?* ***(लूका 17:14)*** *उन्होंने प्रभु यीशु का आज्ञा पालन करके सही काम किया था। परमेश्वर ने हमारे लिए रखे सभी आशीर्वादों को प्राप्त करने के लिए हमें भी उन पर विश्वास करके उनका आज्ञा पालन करना चाहिए।* 4. उन में आए बदलाव से दस लोग आश्चर्यचकित थे लेकिन उनमें से केवल एक ने ही धन्यवाद देने के बारे में सोचा था। उसने परमेश्वर को धन्यवाद देते हुए लौटा और यीशु के पैरों पर गिरा। *समझाओ कि यह आदमी अलग था क्योंकि वह एक सामरी था और यहाँ तक की वह यीशु और दूसरों के देश से भी नहीं था। उस आदमी का कृतज्ञता देखकर ख़ास तौर पर यीशु प्रसन्न था और यीशु ने उनका विश्वास और आज्ञाकारिता के लिए उसका प्रशंसा की। बाकी नौ कोढ़ी के बारे में यीशु कि मनोभाव क्या था?* ***(लूका 17: 15-19)*** *उस दिन सबसे खुशहाल व्यक्ति कौन था?* *5. हमें परमेश्वर का और प्रभु यीशु का आभारी होना चाहिए जिन्होंने हमारे पापों कि प्रायश्चित के लिए अपना जीवन दिया था। इस कहानी में आदमी की उदाहरण का पालन करने के लिए बच्चों को प्रोत्साहित करें।* बाइबल टाइम पाठ को पूरा करें
सीखने	मुख्य पद को सिखाये और व्याख्या कीजिए। ***भजन संहिता 107: 21***
याद करने	बच्चों को उन चीजों की चित्रों के साथ एक समुच्चित चित्र बनाने के लिए कहें, जिनके लिए हमें आभारी होना चाहिए। और उसके बीच में 'धन्यवाद परमेश्वर' शब्द लिखे।

B3 कहानी 1

यीशु से सीखना - यह कहानी यीशु से सीखने के लिए समय निकालने के बारें।

	हम सीख रहे हैं कि: 1. यीशु को सुनना और उनसे सीखना सबसे महत्वपूर्ण है। 2. हमें बाइबल के ज़रिये यीशु को सुनने की ज़रूरत है। **मुख्य पद :** ***लूका 10: 42*** **बाइबल अनुभाग :** ***लूका 10:38-42***
पहचान कराने	1. इस बारे में बात करें कि आपकी मां अपने घर आने वाले मेहमान के लिए कैसे तैयार करेगी - खाना पकाने, सफाई आदि 2. बच्चों के लिए प्रासंगिक स्थितियों के बारे में बात करें, जहां ध्यान देकर सुनना महत्वपूर्ण है - एक नया विद्या सीखते समय, दिशा निर्देश मिलते वक्त आदि। 3. बच्चों दे साथ चीनी कानाफूसी खेलो। एक बच्चा दूसरे बच्चे को एक संदेश फुसफुसाते हुए कहते हैं और वह इसे अगले व्यक्ति से फुसफुसाते हुए कहते हैं आखिरी व्यक्ति वह सुनाता है जो उन्होंने सुना है। खेल एक अच्छा श्रोता होने के महत्व पर प्रकाश डालता है। आज की कहानी को ध्यान से सुनने के लिए अपना समय बिताए किसी व्यक्ति से जोड़ें।
सिखाने	1. मार्था और मरियम यीशु के अच्छे मित्र थे। एक दिन मार्था ने यीशु और उनके शिष्यों को भोजन के लिए आमंत्रित किया। *बच्चों के साथ चर्चा करें कि मार्था ने इस दावत के लिए व्यवस्था कैसे की होगी। मेहमानों के आगमन के बारें की कल्पना करें।* ***(लूका 10: 38)*** 2. मार्था के लिए खत्म करने के लिए बहुत काम अभी भी बाकी था। जब वह खाना तैयार कर रही थी उसकी बहन मरियम यीशु के चरणों में बैठकर उसका वचन सुन रही थी। *समझाएं की मार्था कैसे महसूस कर रही होगी। मार्था द्वारा बोली गई सटीक शब्द क्या थीं?* ***(लूका 10:39,40)*** 3. यीशु ने मार्था से समवेदनापूर्ण बात किया और कहा की उसे परेशान होने की जरूरत नहीं थी। *समझाओ कि मार्था यीशु के लिए एक अच्छी चीज कर रही थी ताकि वह उन्हें एक प्यारा भोजन दे सके। लेकिन सबसे महत्वपूर्ण बात यह नहीं थी।* श्रेष्ठतर काम कौन कर रहा था? हाँ, वह मरियम थी। यीशु ने कहा कि मरियम ने कुछ श्रेष्ठ करने के लिए चुना था और यह उससे छीना नहीं जाएगा। ***(लूका 10: 41,42)*** 4. *मरियम ने कौनसा उत्तम भाग चुना? मरियम भाग्यशाली थी कि उसे यीशु को सुनने का मौका मिला। इस बात के बारे में बात करें कि बाइबल पढ़कर हमें भी यीशु को सुनने के लिए समय बिताना चाहिए। इससे हम परमेश्वर को बेहतर जान पायेंगे और उन कार्यों भी जो उन्हें पसंद हैं।* बाइबल टाइम पाठ को पूरा करें
सीखने	मुख्य पद को सिखाये और व्याख्या कीजिए। ***लूका 10: 42*** मरियम ने जो महत्वपूर्ण चुनाव किया था उसकी पुष्टि करें।
याद करने	कहानी को संशोधित करने के लिए बच्चों को निम्नलिखित प्रश्न पूछें: 1. बहनें कहाँ रहते थे? 2. मेहमान कौन थे? 3. किस बहन ने यीशु के साथ समय बिताई? 4. किस बहन ने यीशु की सेवा करना चाहती थी? 5. किस बहन चिंतित थी? 6. मार्था परेशान क्यों थी? 7. मार्था ने किस्से शिकायत की थी? 8. हमें किस बहन कि उदाहरण को अनुकरण करना चाहिए ? 9. हम यीशु को कैसे सुन सकते हैं? 10. बाइबल में यह कहानी कहाँ लिखी गई है?

B3 कहानी 2

यीशु द्वारा जीवन - यह कहानी यीशु एक मृतक व्यक्ति को पुनर्जीवित करने के बारे में है।

	हम सीख रहे हैं कि: 1. यीशु को लाज़र को पुनर्जीवित करने की शक्ति थी। 2. प्रभु यीशु हमें अनन्त जीवन दे सकता है अगर हम उन पर भरोसा करें। **मुख्य पद : *यूहन्ना 11:25*** **बाइबल अनुभाग : *यूहन्ना 11: 1-7, 17- 44***
पहचान कराने	1. लेवल 1 के लिए, चर्चा करें कि परमेश्वर ने परिवारों में लोगों को कैसे रकता है। परिवार में भाइयों और बहनों के बारे में बात करें। भाइयों और बहनों के बारे में अच्छी बात क्या है? बच्चों से पूछें कि क्या उन्हें पिछले हफ्ते की कहानी में दो बहनों का नाम याद है और फिर लाज़र को पेश करें। 2. लेवल 2 के लिए, इस बारे में बात करें कि हमारे जीवन में चीजें हमेशा हमारी योजना के अनुसार नहीं होती हैं। कभी-कभी अप्रत्याशित हालात होती हैं जो हमारे नियंत्रण से बाहर हैं। इस बात के बारे में बात करें कि प्रभु हर परिस्थिति के नियंत्रण में है और हमारे सर्वोत्तम भलाई कार्यों के लिए ही काम करता है। आज की कहानी में मरियम और मार्था एक मुश्किल समस्या का सामना कर रहे थे।
सिखाने	1. मरियम और मार्था के भाई लाज़र बहुत बीमार था। वे चाहते थे कि यीशु वहाँ आए, इसलिए उन्होंने उनके लिए कहला भेजा। वे जानते थे कि यीशु ही लाज़र को चंगा कर सकता है। लेकिन यीशु ने नहीं आने का फैसला किया। *यह सुनकर मार्था और मरियम कैसे महसूस करेंगे? व्याख्या करें कि मार्था और मरियम को यह समझना बहुत ही मुश्किल है। प्रभु यीशु नियंत्रण में था और वह जानता था कि सबसे उत्तम क्या था।* ***(यूहन्ना 11: 1-6)*** 2. जल्द ही लाज़र की मृत्यु हो गया और उसे कपड़े में लिपट कर एक कब्र में दफनाया गया जिसके द्वार पर एक बड़ा पत्थर रखा गया। *चर्चा करें कि मार्था और मरियम अब कैसे महसूस कर रहे होंगें।* चार दिन बाद, मार्था ने सुना कि यीशु आ रहा था और वह उनसे मिलने गई। यीशु ने उसे समझाया कि लाज़र फिर से ज़िंदा हो सकता है। *यीशु द्वारा बोली सही शब्दों का प्रयोग करें* ***(पद 25)*** और बताइए कि पुनरुत्थान का अर्थ है कि किसी को मृतकों से पुनर्जीवित करने की शक्ति। किसी और के पास यह शक्ति नहीं है। (यूहन्ना 11: 17 - 27) 3. बाद में यीशु मार्था और मरियम के साथ लाज़र की कब्र पर गए। यीशु ने दुःख की वजह से रोया। तब उन्होंने लोगों से पत्थर हटाने के लिए कहा और बड़े शब्द में पुकारा, 'हे लाज़र , निकल आ!' हर किसी को अचम्भित करके लाज़र कपड़ा के टुकड़ों में लिपटे कब्र से बाहर निकला। उस दिन यीशु ने साबित कर दिया था कि उसे लाज़र को फिर से जीवित करने का अधिकार उस को था। यीशु के अलौकिक कर्म ने लोगों को दिखाया कि वह कितना शक्तिशाली और विशिष्ट था। *यीशु ने इस घटना के माध्यम से लोगों को क्या सिखाया - उनके कालमापन, उनके दुःख का साझा करना, उनकी शक्ति, उनका नियंत्रण ....यह समझाए कि यदि यीशु लाज़र के मरने से पहले आए होते इस अलौकिक कर्म की जरूरत ही नहीं होती!* 4. प्रभु यीशु हमारे सबसे बड़ा दुश्मन -मौत से निपट सकते हैं। उनके पास इसे पराजित करने की शक्ति है। यीशु ने लाज़र को पुनर्जीवित करके और अपने आप दुबारा जी उठाकर यह साबित किया था। जब हम प्रभु पर भरोसा करते हैं तो वह हमें अनन्त जीवन का वादा करता है। बाइबल टाइम पाठ को पूरा करें
सीखने	मुख्य पद को सिखाये और व्याख्या कीजिए। ***यूहन्ना 11:25*** समझाएं कि जब यीशु इस नाम का उपयोग करता है वे हमें खुद के बारे में एक बहुत ही महत्वपूर्ण तथ्य बता रहा है।
याद करने	कहानी को संशोधित करने के लिए बच्चों को निम्नलिखित प्रश्न पूछें: 1. कौन बहुत बीमार था? 2. यीशु के आने से कितना समय लगा? 3. किस बहन ने यीशु से मिलने के लिए बाहर गई? 4. मार्था से बात करते वक्त यीशु ने किस नाम का इस्तेमाल किया? 5. यीशु ने लाज़र की कब्र पर अपना मनोविकार को कैसे प्रकट किया? 6. उसने क्या कहा? 7. यीशु ने उस दिन सभी को क्या साबित किय? 8. हम अनन्त जीवन कैसे प्राप्त कर सकते हैं?

B3 कहानी 3

यीशु के प्रति प्रेम - यह कहानी मरियम यीशु के लिए अपना प्रेम को प्रकट करने के बारे में हैं।

	हम सीख रहे हैं कि: 1. उसके करम से मरियम ने यीशु के लिए अपना प्यार दिखाया। 2. हमारे लिए परमेश्वर के प्यार के बदले में हमें उसे प्यार करना चाहिए। **मुख्य पद :** ***1 यूहन्ना 4: 19*** **बाइबल अनुभाग:** ***यूहन्ना 12: 1-11***
पहचान कराने	कृतज्ञता के प्रतीक दिए जाने वाले उपहारों के बारे में बात करें। आपके संस्कृति से जुड़े कुछ उपहारों के उदाहरण दे और यह तय करें कि वे किसके लिए उपयुक्त होंगे। बच्चों को पिछले हफ्ते की कहानी याद दिलाना और बताना की मार्था, मरियम और लाजर यीशु के लिए कितने आभारी थे।
सिखाने	1. मार्था, मरियम और लाज़रस ने यीशु के सम्मान में एक दावत की आयोजित किया। *घर में हो रही वारदातों की कल्पना कीजिए - मेहमानों से भरा घर, लाज़रस जो स्वस्थ और तन्दुरुस्त दिख रहा था, सबसे महत्वपूर्ण मेहमान के रूप में यीशु, सेवा करती हुई मार्था* ***(यूहन्ना 12:1-2)*** 2. पर्व के दौरान मरियम बहुमूल्य इत्र की एक शीशी लाया और तुरन्त उसने यीशु के पाँवों पर उसे डाला और फिर अपने बालों से पोंछा। *वर्णन करें कि इत्र की सुगंध के कारण मरियम अन्य मेहमानों की केंद्र-बिंदु कैसे बनी। समझाओ की मरियम ने ऐसा किया क्योंकि वह यीशु से बहुत प्यार करती थी। मरियम के लिए यीशु सबसे बहुमूल्य था।* ***(यूहन्ना 12:3)*** 3. यहूदा जो यीशु के चेलों में से एक था उसे समझ में नहीं आया कि मरियम ने इत्र को बहा क्यों दिया। उसे यह सिर्फ फ़िज़ूलखर्ची लगा। *यहूदा ने जो कहा उसे दुहराओ और समझावो कि यहूदा लालची और एक चोर था। (लेवल 2 अध्याय)* ***(यूहन्ना 12:4-6)*** 4. यहूदा और मरियम ने प्रभु यीशु के प्रति अलग-अलग मनोभाव दिखाया। यहूदा ने यीशु की महानता का एहसास नहीं किया। और उनके लिए उसके दिल में कोई प्यार नहीं था। मरियम के लिए यीशु सबसे मूल्यवान था और वह उन्हें बहुत प्यार करती थी। मरियम ने जो उन के लिए किया उससे वह प्रसन्न था। ***(यूहन्ना 12:7,8)*** *किसका उदाहरण को हमें अनुसरण करना चाहिए?* *5. जब हम सोचते हैं कि परमेश्वर ने हमें कितना प्यार किया है और हमें बचाने के लिए अपना जीवन दिया है, वह हमारे लिए अनमोल होना चाहिए। उनके प्यार के बदले में हम उससे प्यार कर सकते हैं, जैसे ही मरियम ने किया। चर्चा करें कि हम यीशु को हमारा प्यार कैसे दिखा सकते हैं। जैसे कि उसे भरोसा करना, प्रार्थना करने और उनके वचन पढ़ने के द्वारा उसके साथ समय बिताना, उसकी आज्ञा मानना, दूसरों से प्यार करना और यीशु के बारें में सबको बताना।* बाइबल टाइम पाठ को पूरा करें
सीखने	मुख्य पद को सिखाये और व्याख्या कीजिए। ***1 यूहन्ना 4: 19*** समझाओ कि हमारा प्यार हमारे लिए उनका प्यार का परिणाम है।
याद करने	कहानी को संशोधित करने के लिए बच्चों को निम्नलिखित प्रश्न पूछें: 1. दावत कहाँ आयोजित किया गया था? 2. वहां सबसे महत्वपूर्ण व्यक्ति कौन था? 3. मरियम ने क्या किया? 4. मरियम ने ऐसे क्यों किया? 5. मरियम यीशु पर इत्र डालने के बारे में यहूदा ने क्या कहा? 6. हमें प्रभु यीशु को प्यार क्यों करना चाहिए?

B3 कहानी 4

यीशु की ओर देखना - यह कहानी यीशु को स्वागत महसूस कराने के बारे में है।

	हम सीख रहे हैं कि: 1. यीशु बहुत ही खास है - वह प्रभुओं का प्रभु है। 2. हमें अपने जीवन में प्रभु यीशु को स्वागत करने की आवश्यकता है। **मुख्य पद :** ***यूहन्ना 1:12*** **बाइबल अनुभाग :** ***लूका 2: 28 - 44***
पहचान कराने	इस बारे में बात करें कि महत्वपूर्ण आगंतुकों का स्वागत कैसे किया जाता हैं। कुछ चित्रों का उपयोग करें और यह जानने का प्रयास करें की उस भीड़ का हिस्सा बनना कैसे होगा। समझाओ कि इस मौके पर प्रभु यीशु विशेष आगंतुक था। वह आखरी बार यरूशलेम शहर में प्रवेश कर रहा था क्योंकि जल्द ही वह समय होगा जब वह हमारे पापों के लिए मरने की परमेश्वर कि योजना को पूरा करेंगे। परमेश्वर चाहता था की लोग यह जाने की यीशु कितना विषिष्ट है। बाइबल उसे राजा के राजा और प्रभुओं के प्रभु कहते हैं। परमेश्वर ने योजना बनाई थी कि इस महत्वपूर्ण दिन पर यीशु कैसे यरूशलेम में प्रवेश करेगा ताकि लोग उसे देखें।
सिखाने	1. जैसा कि यीशु और उसके चेले यरूशलेम के करीब पहुँचे उन्होंने दो चेलों से आगे एक गांव में जाने के लिए कहा, जहां उसे एक गधे को बांधा हुआ मिलेंगे। यीशु ने उसे खोलकर उनके पास लाने का निर्देश दिया। और यदि कोई उससे पूछें तो कहना कि, 'प्रभु को उसका प्रयोजन है।' ***(लूका 19: 28-31)*** 2. *कल्पना करो कि कैसे चेले को गधा मिला और उसे यीशु के पास लाया गया। एक गदहे का बच्चा कैसे प्रतिक्रिया करेगा अगर कोई पहली बार इस पर बैठता है?* चेलों ने अपने कपडे गधे के पीठ पर डाला और काठी के रूप में इस्तेमाल किया। आम तौर पर ऐसा नहीं होता था लेकिन यीशु को अपने सृष्टि पर अधिकार और शक्ति था। ***(लूका 19: 32-35)*** 3. जैसा कि यीशु सड़क पर सवारी करना शुरू किया भीड़ ने एक कालीन बनाने के लिए अपने कपडे को सड़क पर बिछाया। अब भीड़ को पता चला था कि वह कौन था - परमेश्वर द्वारा भेजा हुआ खास राजा। *समझाओ कि एक राजा आम तौर पर घोड़े पर युद्ध के लिए निकलते है।* लेकिन एक गधे पर सवारी करके यीशु ने दिखाया कि वह शांति लाया है। लोग आनन्दित होकर बड़े शब्द से परमेश्वर की स्तुति करने लगे, 'धन्य है वह राजा, जो प्रभु के नाम से आता हैं ***(लूका 19: 36-38)*** 4. *ज़िक्र करे कि पास ही अन्य लोग भी थे जो यीशु को पसंद नहीं करते थे और नाराज थे कि उनका स्वागत हो रहा है।* ***(लूका 19: 39,40)*** प्रभु यीशु जानता था कि जल्द ही इन लोगों की इच्छा पूरी होंगे और उसे मौत की सजा दिए जाएंगे। 5. *बच्चों को आव्हान दे कि हमारे पास प्रभु यीशु के विषय में एक महत्वपूर्ण चुनाव करना है। हम उसे हमारे जीवन में स्वागत करना चुन सकते हैं या उसे अस्वीकार कर सकते हैं। परमेश्वर चाहता है कि हम उनके पुत्र को अपने जीवन में आमंत्रित करें। जब हम ऐसा करते हैं तब हम परमेश्वर के परिवार का हिस्सा बनते हैं।* बाइबल टाइम पाठ को पूरा करें
सीखने	मुख्य पद को सिखाये और व्याख्या कीजिए। ***यूहन्ना 1:12*** समझाएं क, स्वीकार करना, अंगीकार करना या विश्वास करना, इन सभी शब्द स्वागत करने से संबंधित है।
याद करने	पूछें कि क्या निम्नलिखित वचन ***सही*** है या ***गलत:*** 1. यीशु और उसके चेले जेरूसलेम में प्रवेश कर रहे थे। 2. यीशु ने अपने 3 चेलों के एक गांव में भेजा। 3. वे गधे पर सवार थे। 4. जब यीशु अपनी पीठ पर बैठा तो गधा ने कोई बतंगड़ नहीं किया। 5. लोगों ने जमीन पर कालीन रखा। 6. सभी ने यीशु का स्वागत किया। 7. यीशु राजाओं का राजा है और उनका स्वागत किया जाना चाहिए। 8. जब हम अपने जीवन में यीशु का स्वागत करते हैं तो हम परमेश्वर के परिवार का हिस्सा होते हैं।

B4 कहानी 1

यीशु मरने जा रहा है - यह कहानी हमारे लिए मरने वाले प्रभु यीशु के बारे में है।

	हम सीख रहे हैं कि: 1. प्रभु यीशु के साथ बुरी तरह से व्यवहार किया गया था और वे इस तरह कि मौत के पात्र नहीं थे। 2. हमारे पापों से हमें उद्धार दिलाने के लिए यीशु ने अपना प्राण दिया। **मुख्य पद :** ***लूका 23: 33*** **बाइबल अनुभाग :** ***लूका 23:1-26, 32-42***
पहचान कराने	ुछ पत्ते में इन शब्दों को लिखें: **नीचे दिखाना, गलत आरोप, मजाक उड़ाना, उज्जड़ना।** रोज़मर्रा की जिंदगी में इन बातों के उदाहरण दें। अगर कोई इस तरह से बर्ताव करे तो कैसा लगेगा, बच्चे अपने स्वयं के अनुभवों के बारे में बात कर सकते हैं। अगर कोई हमारे साथ ऐसे करे तो किसी भी तरह हम उसे रोकना चाहेंगे। समझाओ कि प्रभु यीशु जानता था कि प्रताड़ित होने का अनुभव क्या होता है। आज हमें यसीखेंगे कि वह इस तरह क्यों पीड़ित हुआ।
सिखाने	*1. कुछ प्रश्न पूछें ताकि बच्चों को यरूशलेम में प्रवेश के बारें में याद दिलाया जा सके।* कुछ दिन बाद, यीशु ने अपने चेलों के साथ एक खास प्रतिभोज खाया। वह उनकी मृत्यु से पहले की अंतिम दावत था। फिर वह प्रार्थना करने के लिए एक बगीचे में गया। *इस नजारे की वर्णन करें - अंधकार, खामोशी, पैरों की आहट, और यीशु की गिरफ्तारी में यहूदा का हिस्सा। यीशु ने जो उदासी महसूस किया उसका वर्णन करें।* 2. अगले दिन यीशु को हाकिम पिलातुस के पास ले जाया गया। ***(लूका 23:1-4, 20-25)*** *उसका अधिकार की पद के बारें में समजाओ और इस तथ्य पर ध्यान केंद्रित करो कि उन्होंने यीशु में कोई दोष नहीं पाया था। परमेश्वर सम्पूर्ण और पवित्र था।* अंत में, पिलातुस ने वो किया जो क्रोधित भीड़ चाहता था और उसने यीशु को मौत की सजा सुनाई। *हमारे लिए यह बहुत अन्यायपूर्ण लगता है लेकिन यह हमें बचाने के लिए परमेश्वर की योजना का हिस्सा था!* 3. यीशु को यरूशलेम से बाहर ले जाया गया। शमौन नामक एक आदमी को भारी लकड़ी के क्रूस को ले चलने के लिए मजबूर किया गया। ***(लूका 23: 26)*** जब वे पहाड़ी पर पहुंचें, सैनिकों ने यीशु को क्रूस पर चढ़ाया। यीशु के दोनों तरफ दो कुकर्मियों को भी मौत के लिए क्रूस पर चढ़ाया गया था।जब यीशु क्रूस पर लटक रहा था, सैनिकों ने उसका मज़ाक उड़ाया और यहां तक कि एक कुकर्मी भी उससे बहुत कठोर तरह से पेश आया। दूसरा कुकर्मी को पता था कि यीशु उनसे अलग था। वह समझ गया कि उसको मौत की सजा उनके पापों के लिए मिल रहा था लेकिन यीशु निर्दोष था। उसने महसूस किया कि यीशु कौन था और उसने यीशु से उनको याद रकने को कहा। यीशु ने वादा किया था कि उसी दिन वह स्वर्ग में उसके साथ रहेगा। । ***(लूका 23: 32-43)*** *समझाओ कि कुकर्मी की तरह हमें भी यह समझने की ज़रूरत है कि यीशु मरने के योग्य नहीं थे। इसके बजाय उन्होंने पीड़ा सहकर अपना प्राण दिया ताकि वह हमारे पापों को अपना ऊपर लेकर हमें परमेश्वर के महान प्रेम दिखा सकें। अगर हम उससे क्षमा मांगे तो हम यह सुनिश्चित कर सकते हैं कि एक दिन हम स्वर्ग में होंगे।* बाइबल टाइम पाठ को पूरा करें
सीखने	मुख्य पद को सिखाये और व्याख्या कीजिए। : ***लूका 23: 33*** उस पहाड़ी का नाम क्या था जहां यीशु ने अपना प्राण दिया?
याद करने	शीर्षकों को क्रमभंग करे और बच्चों से उन्हें सही क्रम में लगाने को कहे।

B4 कहानी 2

यीशु कि मृत्यु और दफन - यह कहानी प्रभु यीशु की मौत और दफन के बारे में है

	हम सीख रहे हैं कि: 1. यीशु की मृत्यु सब से अलग थी क्योंकि उसने हमारे पापों की दंड अपने ऊपर लिया था। 2. हमारे लिए उनके महान प्रेम के लिए हमें उन्हें धन्यवाद देना चाहिए। **मुख्य पद :** ***1 कुरिन्थियों 15: 3,4*** **बाइबल अनुभाग :** ***लूका 23: 44-56***
पहचान कराने	दिन और रात के बारे में बात करें, कैसे सुबह के बाद रात आती है। हम जानते हैं कि रात एक निश्चित समय पर आती है, क्यों की परमेश्वर ने इसका प्रबन्ध इस तरह से किया था। लेकिन उस दिन जब यीशु की मृत्यु हुई बिना किसी चेतावनी के सुबह कि 12 बजे, सूरज कि रोशनी ग़ायब हो गया और अंधेरा छा गई। यह तीन घंटे तक चली। ***(लूका 22: 44,45)*** परमेश्वर ने ऐसा होने क्यों दिया?
सिखाने	1. बाइबल हमें बताता है कि इन तीन घंटों के दौरान प्रभु यीशु को हमारे पाप के लिए पिता परमेश्वर दंडित कर रहा था। *बच्चों को स्मरण करने के लिए कहें की कैसे पिछले हफ्ते कि कहानी में यीशु ने पीड़ा सहा था। समझाओ कि हम उनकी पीड़ा की सीमा को कभी नहीं समझेंगे। और हम यह कभी नहीं समझ पाएंगे की वह हमारे पापों का सज़ा अपने ऊपर क्यों लिया। यीशु ने स्वेच्छा से यह किया क्योंकि वह हमें प्यार करता था और अपने पिता की योजना को पूरा करना चाहता था ताकि हमें उद्धार मिलें।* 2. आखिरकार यीशु ने प्रार्थना करके अपनी आत्मा को परमेश्वर के हाथ में सौप दिया। ***(लूका 23: 46)*** इस तरह से यीशु ये कह रहा था कि उसने उस काम को पूरा किया जिसे करने के लिए उसके पिता ने उसे भेजा था। *एक साधारण कार्य भी पूरा करने के बाद हमें जो संतुष्टि हमे मिलती है उसका जिक्र करें। हमारे पापों की क्षमा के लिए जो कुछ भी जरूरी था उसे यीशु ने पूरा कर लिया था। बच्चों को बताएं कि उनके लिए यीशु ने जो कुछ भी किया, इसका प्रतिक्रिया देने की आवश्यकता क्यों है।* 3. तब यीशु की मृत्यु हो गई। *उनके दोस्तों के भावनावों के बारें में चर्चा करें।* यूसुफ़ नाम का एक दयालु मित्र पिलातुस के पास गया और यीशु के शव माँगा। बहूत सावधानी से उसने शरीर को क्रूस से उतारा और मलमल के चादर में लपेटकर एक नई कब्र में रखा। *समझाओ कि कब्र एक छोटी सी गुफा की तरह थी।* फिर उसने प्रवेश द्वार के पार एक बड़ा पत्थर लुढ़का। ***(लूका 22: 50-53)*** बाइबल टाइम पाठ को पूरा करें
सीखने	मुख्य पद को सिखाये और व्याख्या कीजिए। ***1 कुरिन्थियों 15: 3,4*** बच्चों को बताएं कि पभु यीशु के साथ जो कुछ भी हुआ था, वह सैकड़ों वर्ष पहले ही पुराने नियमों में लिखा गया था।
याद करने	पूछें कि क्या यह वाक्य ***सही*** हैं या ***गलत*** : 1. दिन के मध्य में रात शुरू हुआ। 2. यह चार घंटे तक चली। 3. अंधेरे के दौरान यीशु ने हमारे पाप का दंड अपने ऊपर लिया। 4. यीशु ने मरने से पहले अपने पिता से बात की। 5. यीशु के दोस्तों को वह सब समझ में आया जो उनके साथ हो रहा था। 6. यूसुफ ने सैनिकों से यीशु के शव के लिए पूछा। 7. उसने मलमल के कपड़े में शरीर को लपेट लिया। 8. उसने शरीर को एक पुरानी कब्र में रखा।

B4 कहानी 3

यीशु के पुनरुत्थान - यह कहानी मरियम को यीशु के जीवित होने के बारे में पता चलने के बारें में हैं।

	हम सीख रहे हैं कि: 1. मृत्यु के तीन दिन बाद पमेश्वर ने यीशु को पुनर्जीवित किया। 2. जैसे मरियम ने जीवित यीशु को खोजा उसी तरह हम भी कर सकते है। **मुख्यपद :** ***रोमियों 10: 9*** **बाइबल अनुभाग :** ***यूहन्ना 20: 1-18***
पहचान कराने	पिछली कहानी में हमने सीखा कि यीशु क्रूस पर अपना प्राण दिया। समझाओ कि हमारे लिए यह अच्छी खबर है! क्रूस पर यीशु की मृत्यु के माध्यम से परमेश्वर ने एक रास्ता प्रदान किया ता कि हमारे पापों को माफ किया जा सके। परमेश्वर की अद्भुत योजना पूरी हो चुकी थी। लेकिन यीशु के दोस्त परेशान और उदास थे। वे हमारे तरह हालात को समझने में सक्षमन हीं थे जैसे आज बाइबल की सहायता से हम समझ रहे है। लेकिन उन्हें लंबे समय तक दुखी रहने की आवश्यक्ता नही था। इस कहानी का एक सुखद अंत है।
सिखाने	*1. बच्चों को यीशु की दफ़न और कब्र के द्वार पर रखा बड़ी पत्थर से बारे में याद दिलाएं।* यीशु के मरने के तीसरे दिन बाद रविवार की सबेरे, यीशु का एक अच्छा दोस्त, मरियम, कब्र का दर्शन करने गई। *उसकी अचम्भे के वर्णन करें जब उसने देखा की पत्थर को कब्र से हटा हुआ देखा।* मरियम ने पतरस और यूहन्ना से कहने केलिए भागी। मरियम ने उनसे क्या कहा? ***(यूहन्ना 20: 1,2)*** *इस समाचार को सुनकर वे कैसे महसूस कर रहे होंगे?* 2. पतरस और यूहन्ना इस खबर से उत्साहित थे और वे जितनी जल्दी हो सके उतने ही जल्दी भागकर कब्र पर पहुंचे। यूहन्ना पहले पहुंचे और कब्र में देखा लेकिन जब पतरस वहां पहुंचा, तो वह अंदर गया! अन्दर सिर्फ वह मलमल के कपडे थे जिसमें यीशु को लिपटा था। फिर यूहन्ना अन्दर गया। यूहन्ना समझ गया ही क्या हुआ है वह जान गया की यीशु जीवित था। ***(यूहन्ना20: 3-9)*** 3. लेकिन मरियम अभी भी हैरान थी। पतरस और यूहन्ना के घर वापस जाने के बाद भी वह कब्र के पास खड़ी रही। वह रो रही थी और एक बार फिर कब्र की और देखी। इसबार मरियम को एक और आश्चर्य मिला। *दो स्वर्गदूतों और उनके साथ मरियम की बातचीत की व्याख्या करें।* ***(यूहन्ना 20: 10-13)*** 4. तब मरियम पीछे मुड़ी और उस ाबगीचे में एक आदमी खड़ा देखा जिसे वह जानती नहीं थी। *उनके भीं चकी बातचीत की वर्णन करो।* जब उस अजनबी ने उसका नाम पुकारा, तुरंत ही उसने उसका आवाज़ को पहचान लिया। यह उसका रब्बूनीथा, प्रभु परमेश्वर। *मरियम अब कैसे महसूस कर रही होगी?* वह बेहत खुश थी। 5. वह अपने आँखों से प्रभु को देखाथा। वह वास्तव में जीवित थे। दूसरी बार मरियम ने चेलों के पास गई। *इसबार वह उनसे क्या कहेंगी?* ***(यूहन्ना 20: 14-18)*** *6. परमेश्वर ने प्रभु यीशु को पुनर्जीवित किया था। आज भी वह जीवित है और हमेशा केलिए रहेगा। परमेश्वर हमारी ज़िंदगी आनन्द से भरना चाहता है जैसे मरियम को कब्र पर उनसे मिलने पर हुई थी। बच्चों को यीशु के दोस्त होने के बारे में आह्वान दें। बताएं की परमेश्वर हमें क्षमा, शक्ति और ख़ुशी देना चाहता है।* बाइबल टाइम पाठ को पूरा करें
सीखने	मुख्य पद को सिखाये और व्याख्या कीजिए। ***रोमियों 10: 9*** समझाओ कि 'स्वीकरण' काम तलब है कि दूसरों से हमारे विश्वास के बारें में कहना कि यीशु ही प्रभु हैं। यह पद हमें सिखाती है कि हमें यह विश्वास करने की ज़रूरत है कि परमेश्वर ने मृत कों से यीशु को जी उठायाता कि हमारे पापों की सज़ा से हमें बचा सके।
याद करने	कहानी को संशोधित करने केलिए बच्चों को निम्नलिखित प्रश्न पूछें: 1. कब्र पर पहले कौन पहुंचे? 2. कब्र पहुंच कर मरियम ने क्या देखा ? 3. उसने जाकर किस को वह खबरदी ? 4. पहले कब्र में किसने प्रवेश किया था? 5. जब यूहन्नाने कब्र को खाली देखा तो उसने कैसे महसूस किया? 6. कब्र में अकेली खड़ी होकर मरियम ने क्या किया? 7. स्वर्गदूतों ने मरियम को क्या बताया? 8. उसे कैसे पता था कि वह यीशु था? 9. किसने यीशु को पुनर्जीवित किया था?

B4 कहानी 4

यीशु का स्वर्गारोहण और वापस लौटना - यह कहानी प्रभु यीशु स्वर्ग से वापस आने के बारे में है।

	हम सीख रहे हैं कि: यीशु ने स्वर्गारोहण किया और अभी भी वहां है। हमें उनकी वापसी के लिए तैयार रहने की आवश्यकता है। **मुख्य पद :** ***प्रेरितों 1:11*** **बाइबल अनुभाग :** ***लूका 24: 50-53; प्रेरितों 1: 4-12***
पहचान कराने	अलविदा कहने के बारे में चर्चा करें। आपके साथ रहने के बाद रिश्तेदार वापस जा रहे हैं या स्कूल के दोस्त आपको छोड़कर दुसरे शहर रहने जा रहे है। शायद ये लोग जाते वक्त वापस आने का या आपसे संपर्क करने का वादा करता है। इस वादे से विदाई कम दर्दनाक बनता है।
सिखाने	1. पुनरुत्थान के बाद चेलों यीशु के साथ कुछ बढ़िया समय बिताये और अब वे समझते थे की यीशु ने अपना प्राण क्यों दिया था। करीब छह हफ्ते के बाद उन्होंने ग्यारह चेलों को एक पहाड़ी पर ले लिया, जिसे जैतून पहाड़ कहा जाता था। यीशु ने उनसे कहा कि उनके लिए स्वर्ग वापस जाने का वक्त आ गया है। लेकिन वे अकेले नहीं छोड़े जायेंगे। क्योंकि जल्द ही एक विशेष सहायक - पवित्र आत्मा उनके पास आएगा। अचानक, जैसे यीशु उनसे बात कर रहा था वह ऊपर उठ गया। *कल्पना कीजिए कि उन्होंने आकाश के ओर कैसे ताकते रहे लेकिन तभी यीशु बादल में छिप गए। चेलों अब कैसे महसूस कर रहे होंगे? - उलझा हुआ? हैरान? उदास?* ***(प्रेरितों 1: 8,9)*** 2. उस पल में दो स्वर्गदूत दिखाई दिए और चेलों से पूछा कि वे आकाश के ओर देख कर क्यों खड़े थे? तब स्वर्गदूतों ने उनसे कहा कि जैसे यीशु स्वर्ग गे उसी रीति से वापस आएगा। ***(प्रेरितों 1: 10,11)*** 3. चेलों को पता था कि वे पहाड़ी पर बने रहना चाहते थे लेकिन इसके बजाय उन्हें यरूशलेम जाना चाहिए, उस सहायक को प्राप्त करने के लिए जो यीशु ने वादा किया था। वे दुखी नही थे लेकिन खुशी से भरे थे। ***(लूका 24:52)*** *समझाओ की चलें जानते थे कि यीशु अपना वादा रखेंगे उसी तरह हमें भी यह विश्वास करने की ज़रूरत है की यीशु हमारे लिए किए वादों को पूरा करेंगे।* 4. प्रभु आज भी स्वर्ग में है, लेकिन जो लोग उससे प्यार करते हैं, वे उनकी वापसी की प्रतीक्षा कर रहे हैं। हम नहीं जानते कि यह कब होगा, लेकिन हम जानते हैं कि यह होगा क्योंकि हम विश्वास करते हैं कि वे अपना वादा पूरा करेगा। *यीशु के वापस आने के लिए तैयार होने के बारे में बच्चों को समझाना और यह सुनिश्चित करना कि वे समझते है की तैयार कैसे होना चाहिए - अपने पापों की क्षमा के लिए प्रभु यीशु पर भरोसा करके।* बाइबल टाइम पाठ को पूरा करें
सीखने	मुख्य पद को सिखाये और व्याख्या कीजिए। ***प्रेरितों 1:11*** यह एक लंबी पद है इसलिए बच्चों को उनकी उम्र के अनुसार सिखाए। बच्चों को मुख्य पद के संदर्भ को याद दिलाना - किसने कहा,किस से कहा गया था, कब / कहाँ यह कहा गया था।
याद करने	कहानी को संशोधित करने के लिए बच्चों को निम्नलिखित प्रश्न पूछें: 1. जैतून के पर्वत पर यीशु के साथ कितने चेले थे? 2. यीशु ने चेलों को वे किस जगह जाने के बारे में कह रहा था? 3. यीशु ने चेलों क क्या वादा किया था की वे प्राप्त करेंगे? 4. उसे उनकी दृष्टि से क्या छिपाया? 5. स्वर्गदूतों ने उन्हें क्या संदेश दिया? 6. चलें फिर कहाँ गए? 7. यीशु कब वापस आएगा? 8. वह किसके लिए वापस आ रहा है?

B5 कहानी 1

दयालु सामरी - यह कहानी आपके पड़ोसी को प्यार करने के बारें में है।

	हम सीख रहे हैं कि: 1. प्रभु यीशु चाहता है कि जिससे भी हम मिले उनसे दरियादिली दिखाएँ। 2. यीशु दयालु सामरी की तरह है। वह हमारे उद्धारकर्ता, मित्र और सहाय्यक बनना चाहता है। **मुख्य पद :** ***लूका 10: 27*** **बाइबल अनुभाग :** ***लूका 10: 25-37***
पहचान कराने	बच्चों को उनकी पसंदीदा कहानी के बारें में कहने को कहे। समझाओ कि परमेश्वर को समझने में मदद करने के लिए यीशु ने लोगों को अनेक कहानियों सुनाई थी। इन सभी कहानियों के विशेष अर्थ हैं। इन कहानियों को दृष्टान्त कहा जाता है। बच्चों को एक लंबी यात्रा के बारे में बात करने के लिए कहें। वे कहाँ जा रहे थे? वह यात्रा कैसे की? क्या यात्रा योजना के प्रकार चली?
सिखाने	1. यीशु ने उस आदमी के प्रश्न के जवाब में यात्रा में निकले एक आदमी के बारे में एक कहानी बताई। जो व्यक्ति प्रश्न पूछ रहा था, वह जानता था कि अपने सारे मन, प्राण, शक्ति और बुद्धि से यीशु को प्यार करना चाहिए। और वह यह भी जानता था की अपने पड़ोसियों को अपने समान प्यार करना चाहियें। लेकिन इसका मतलब वह नहीं जानता था। ***(लूका 10: 25 - 28)*** *चर्चा करें - सारे मन, प्राण, शक्ति और बुद्धि से यीशु को प्यार करने का मतलब क्या है ?अपने पड़ोसी से प्यार करने का मतलब क्या है?* 2. यीशु ने एक कहानी बताने शुरू किया उसे यह समझाने के लिए कि वास्तव में उसका पड़ोसी कौन है। एक आदमी यरूशलेम से यरीहो के लिए एक यात्रा में निकला। और यात्रा के दौरान उस पर हमला हुआ, उसे लूटा गया और मृत के लिए छोड़ दिया गया। ***(लूका 10:29 - 30)*** इस आदमी की यात्रा का बुरा परिणाम हुआ! *बाइबल के समय की जगहों का नक्शा दिखा कर बच्चों से यरूशलेम और यरीहो ढूंढने के लिए कहे।* 3. तीन लोग उसी सड़क पर आए थे। पहला व्यक्ति एक याजक था, वह बस देखा और कतराकर चला गया। दूसरा आदमी एक लेवी (एक आदमी जो मंदिर में मदद करता था), वह पास आया और उस घायल व्यक्ति को देखा लेकिन मदद करने के लिए कुछ नहीं किया। ***(लूका 10:31,32)*** 4. तीसरा व्यक्ति एक सामरी था। (यहूदी और सामरी मित्र नही थे) वह घायल व्यक्ति के पास आया, उसके गावों पर तेल और दाखरस डालकर पट्टियां बाँधी, और अपनी सवारी पर चढ़ाकर सराय में ले गया। सामरी ने रात भर वहां रुका और दुसरे दिन सराय के मालिक को सामरी कि देखभाल के लिए दो दीनार दिया। ***(लूका 10:33-35)*** 5. जब यीशु ने कहानी समाप्त किया उसने पुछा, 'इन तीनो में से उसका पड़ोसी कौन है?' उसने कहा, 'वही जिस ने उस पर दया की ' यीशु ने कहा, 'तू भी ऐसा ही कर ' ***(लूका 10: 36,37)*** *6. हम उन लोगों के प्रति दयालु कैसे हो सकते हैं जिन्हें हम मिलते हैं? क्या लोगों से करुणा दिखाना मुश्किल हो सकता है? बच्चों को याद दिलाना है कि यीशु सिखाता है कि हमें हर किसी के प्रति दया होना चाहिए, न सिर्फ उनसे जो हमारे लिए सहायक हैं। हमारे लिए यीशु एक दयालु सामरी कैसे है? (वह हमारे उद्धारकर्ता, सहायक और मित्र बनना चाहता है)* बाइबल टाइम पाठ को पूरा करें
सीखने	मुख्य पद को सिखाये और व्याख्या कीजिए। ***लूका 10: 27***
याद करने	कहानी को संशोधित करने के लिए बच्चों को निम्नलिखित प्रश्न पूछें: 1. यीशु से बताए गए कहानियों को क्या कहते हैं? 2. यात्रा करने वाला व्यक्ति कहां जा रहा था? 3. उसे क्या हुआ? 4. कितने लोग उसके पास से गुजरें ? 5. कौन उसके मदद के लिए रुका? 6. उसने क्या किया? 7. उसने सराय के मालिक को कितने दीनार दिए? 8. कहानी के अन्त में उस आदमी से क्या कहा?

B5 कहानी 2

खोई हुई भेड़ - यह कहानी इस तथ्य के बारे में है कि यीशु हमारे लिए कितना परवाह करता है

	हम सीख रहे हैं कि: 1. हम खोए भेड़ों की तरह हैं क्योंकि हमने गलत/पाप किया है। 2. यीशु अच्छा चरवाहा की तरह है और वह हमें ढूंढना चाहता है। **मुख्य पद :** ***यूहन्ना 10:11*** **बाइबल अनुभाग :** ***लूका 15: 1-7***
पहचान कराने	क्या आप कभी गुम हो गए है? यह कैसे हुआ? उस वक्त कैसा महसूस हुआ? किसने आपको ढूंढ निकला? जब अंत में आपको पाया गया, तो आपको कैसा लगा? बच्चों को बताओ कि आज की कहानी एक चरवाहा के बारे में है जो एक भेड़ को खो दिया है। उनसे पूछो कि एक चरवाहा भेड़ों की देखभाल करने के लिए क्या करेगा (चारा प्रबंध करना, सुरक्षा, देखभाल आदि) बच्चों को समझाएं कि भेड़ अक्सर भटक जाते है और गुम हो जाते है।
सिखाने	1. एक दिन कुछ चुंगी लेनेवाले और पापियों ने यीशु को सुनने के लिए आया। कुछ अन्य लोग कुड़कुड़ाना और शिकायत करने लगे क्योंकि यीशु पापियों से मिलकर उनके साथ खाना खा रहा था। यह कुड़कुड़ाना और शिकायत करने से यीशु पसन्द नहीं थे और वे एक कहानी सुनाने लगा। ***(लूका 15:1-3***) *बच्चों को समझाओ कि यीशु चाहता है कि सभी लोग उसके पास आएं। उन्हें यह कोई फर्क नहीं पड़ता कि वे कौन हैं या उन्होंने गलत क्या किया है।* 2. उसने एक चरवाहा के बारे में एक कहानी को बताया जिससे पास 100 भेड़ थी। एक दिन उनमें से एक गुम हो गया। चरवाहा ने अन्य सभी भेड़ को छोड़ दिया और खोया एक की तलाश करने के लिए निकला। वह तब तक खुश नहीं था जब तक कि वह उसे नहीं मिला। ***(लूका 15:4)*** *बच्चों को बताएं कि बाइबल कहता है कि हम भेड़ों की तरह 'खोए' हुए हैं। यीशु अच्छा चरवाहा है और वह हमें ढूंढना और हमारे लिए परवाह करना चाहता है। बच्चों से पूछो कि वे हमारे लिए उनकी देखभाल को कैसे दर्शाते हैं। आप उन्हें एक बोर्ड या कागज़ में लिख सकते हैं और बच्चों को उनकी देखभाल के लिए आभारी होने के लिए प्रोत्साहित कर सकते हैं। इस तथ्य पर महत्त्व दे की यीशु ने हमारे लिए परवाह अपने प्राण देकर किया था।* 3. आखिर में जब उसे भेड़ मिला तो वह बहुत खुश हुए। उसने भेड़ को उठा लिया, उसे अपने कंधों पर रखक्रर उसे घर ले गया। जब वह घर पहुँचा तो उसने अपने सभी दोस्तों और पड़ोसियों को बुलाया। क्योंकि उसे अपने खोये हुए भेड मिल गए थे। ***(लूका 15: 5 - 6)*** *बच्चों को बताएं कि जैसे वह आदमी अपने खोए भेड को मिलने पर बहुत खुश हुए थे, वैसे ही जब कोई अपने गलत काम / पाप के किए माफ़ी मांग कर यीशु पर भरोसा करते हैं तब स्वर्ग में वास्तविक आनन्द होता है। आप एक साधारण भूमिका निभाकर कहानी को सुदृढ़ कर सकते हैं - भेड़ के गायब होना, चरवाहा भेड़ को तलाशना, भेड़ को मिलने पर दोस्तों के साथ खुशी मनाना।* बाइबल टाइम पाठ को पूरा करें
सीखने	मुख्य पद को सिखाये और व्याख्या कीजिए। यूहन्ना 10:11
याद करने	कहानी को संशोधित करने के लिए बच्चों को निम्नलिखित प्रश्न पूछें: 1. कुछ लोग खुश क्यों नहीं थे? 2. चरवाह के पास कितने भेड़ हैं? 3. कितने गायब हो गए? 4. चरवाहा ने क्या किया? 5. वह भेड़ को घर कैसे ले गया? 6. घर पहुँचने पर उसने क्या किया? 7. कौन भेड़ की तरह है? 8. कौन चरवाहा की तरह है?

B5 कहानी 3

उड़ाऊ पुत्र - यह कहानी गलत करने के लिए शर्मिन्दा/खेद होने के बारे में है

	हम सीख रहे हैं कि: 1. परमेश्वर चाहता है कि हम अपने गलतियाँ या पापों के लिए खेद प्रकट करे। 2. परमेश्वर हमेशा हमें माफ़ करेंगे जब हम उससे कहे कि हमें खेद है। **मुख्य पद :** ***लूका 15:24*** **बाइबल अनुभाग :** ***लूका 15: 11-24***
पहचान कराने	क्षमा के विचार को स्पष्ट करने के लिए बच्चों को एक कहानी बताएं। *उन्हें अपनी - अपनी कहानियों को साझा करने के लिए कहें। बच्चों को बताएं कि बाइबल से आज की कहानी क्षमा के बारे में है।*
सिखाने	1. यीशु ने एक और कहानी बताया, एक आदमी था, जिसकी दो बेटे थे। छोटे बेटे ने पैसे के लिए अपने पिता से भाग पुछा। पिता ने उसे पैसा दिया। चर्चा करें कि पिता अब कैसे महसूस कर रहे होंगे। ***(लूका 15: 11,12)*** 2. तुरंत ही, बेटे ने अपना सामान उठाया किया और एक लंबी सफर पर चला गया। जब वह घर से दूर था, उसने अपने पैसे को पूरी तरह से बर्बाद कर दिया। और कोई भी मदद के लिए नहीं था। उसे सुवर चराने का नौकरी मिला। कभी-कभी उसे इतना भूख लगा की उसे जानवरों का खाना खाने पड़ा। ***(लूका 15: 13-16)*** *चर्चा करें कि बेटा कैसे महसूस कर रहा होगा जब उन्हें एहसास हुआ कि उसे के पास कुछ बचा नहीं था?आपको क्या लगता है कि उन्हें क्या करना चाहिए था?* 3. एक दिन वह घर वापस जाने के बारे में सोचने लगे। उसे याद आया कि वहां कि नौकरों को भी पर्याप्त मात्रा में खाने के लिए मिलता था। उसने अपने पिता के घर वापस लौटने का फैसला किया। उसने अपने पिता से माफी मांगकर उनसे यह कहने का फैसला किया कि वह उसे एक नौकर के रूप में वहां रखे। । ***(लूका 15: 17-19)*** *चर्चा करे की क्या बेटे को माफ किया जाना चाहिए? क्या आपको लगता है कि पिता उसे माफ कर देंगे?* 4. वह अपने घर के ओर चला। वह घर के पास पहुँच ही रहा था जब उसके पिता ने उसे देखा और दौड़कर उसे गले लगाया और बहुत चूमा। बेटे ने माफ़ी माँगना शुरू किया लेकिन उसके पिता ने उसे रोका और अपने नौकरों से अपने पुत्र के लिए अच्छे कपडे, अँगूठी और जूते लाने के लिए कहा। और अपने बेटे की लौटने की ख़ुशी में एक बड़ी दावत की आयोजन भी करने के लिए कहा। ***(लूका 15: 20-24)*** *5. घर वापस लौटने के बाद उस बेटे ने कैसा महसूस किया होगा? बच्चों को समझाओ कि हम भी उस पुत्र की तरह हैं क्योंकि हमने भी गलत काम किया है। परमेश्वर उस पिता की तरह है। वह चाहता है कि हम उसके पास आएँ और उसे बताएं कि हमें खेद है। क्या आपने किसी से माफी मांगने की कोशिश की है और उन्होंने आपको नजरअंदाज किया या माफ़ नहीं किया? बच्चों को बताओ कि परमेश्वर हमेशा हमें सुनते है और जब हम माफ़ी मांगते है वे हमें क्षमा करते हैं।* बाइबल टाइम पाठ को पूरा करें
सीखने	मुख्य पद को सिखाये और व्याख्या कीजिए। ***लूका 15:24*** समझाओ कि पिता को पता नहीं था कि उनके बेटे के साथ क्या हुआ था। ऐसा लग रहा था कि उसका मृत्यु हो गया था। लेकिन अब वह वापस आ गया है, वह वास्तव में जीवित था।
याद करने	कहानी को संशोधित करने के लिए बच्चों को निम्नलिखित प्रश्न पूछें: 1. उस आदमी के कितने पुत्र थे? 2. छोटे बेटे ने अपने पिता से क्या पूछा? 3. बेटे ने अपने पैसे के साथ क्या किया? 4. उसे क्या काम मिला? 5. उसने फिर क्या करने का फैसला किया? 6. अपने पिता ने क्या किया जब उन्होंने देखा कि उसका बेटा घर आ रहा है? 7. पिता ने बेटे को क्या दिया? 8. इस कहानी की पिता किसके तरह थे?

B5 कहानी 4

बुआई करनेवाला - यह कहानी परमेश्वर के वचन के प्रति हमारी प्रतिक्रिया के बारे में है।

	हम सीख रहे हैं कि: 1. बाइबल परमेश्वर का वचन है। 2. परमेश्वर चाहता है कि हम अच्छी भूमि की तरह बनें और परमेश्वर के वचन पर विश्वास करें। **मुख्यपद : *मरकुस 4:20*** **बाइबल अनुभाग : *मरकुस 4: 1-20***
पहचान कराने	क्या आपने कभी एक पौधे को उगाने की कोशिश की है? आपने किस पौधे को उगाया? पौधे को बढ़ने केलिए क्या जरूरत थी? क्या यह पौधा मजबूत बनाया मुरझा गया था? बच्चों को समझाओ कि आज की कहानी एक किसान के बारे में है जो कुछ फसलों को उगाने की कोशिश की थी।
सिखाने	1. एक बड़ी भीड़ यीशु को सुनने केलिए आई थी। भीड़ इतनी बड़ी थी की यीशु झील में एक नाव पर चढ़कर बैठ गया और किनारे बैठे लोगों को सिखाने लगा। उन्होंने उन्हें एक और कहानी सुनाई। ***(मरकुस 4:1-2***) *हर कोई यीशु की कहानियां को सुनना क्यों चाहता है? अगर आप उस समय जीवित थे क्या आप उनकी कहानियों को सुनना चाहेंगें?* 2. एक किसान बीज बोन केलिए निकला। बोते समय बीज चार विभिन्नप्रकार के जमीन पर गिरा। कुछ मार्ग के किनारे गिरा और पक्षियों ने आकर उसे चुग लिया, कुछ पथरी ली भूमि पर गिर ाजहाँ उसको बहुत मिट्टी नहीं मिली, इसलिए जड़न पकड़ने के कारण सूरज निकलने पर सूख गया। कुछ झाड़ियों में गिरा, और झाड़ियों ने बढ़कर उसे दबा दिया और वह फलन हींलाया। परंतु कुछ अच्छी भूमि पर गिरा और वह उगा और बढ़कर फलवन्त हुआ। ***(मरकुस4:3-9)*** *बच्चों को बताएं कि इस कहानी का बीज परमेश्वर के वचन का प्रतिनिधित्व करता है। परमेश्वर के वचन बाइबल है। समझाओ कि यदि हम परमेश्वर के वचन सुनना चाहते हैं तो हमें बाइबल पढ़ना चाहिए।* 3. फिर यीशु ने दृष्टांत को समझाया। जब बीज मार्ग के किनारे गिरते है और पक्षियां उसे चुगलेते है यह उन लोगों के तरह है जो परमेश्वर के वचन को सुनते है, लेकिन शैतान तुरंत आकर उनमे बोया गया वचन को उठा ले जाता है। कहो कि ऐसे लोग यीशु का अनुसरण करने का निर्णय लेते हैं, लेकिन फिर जैसे ही कोई समस्या आती है, तभी उनके मन बदलते हैं। झाड़ियों से दबेबी जउन लोगों के तरह है नो परमेश्वर के वचन सुनते है लेकिन संसार, धन और अन्य वस्तुओ की चिंतासे उनके अन्दर की वचन को दबा देता है। लेकिन जोबीज अच्छी भूमि में बोएगए है ये उनलोगों के तरह है जो वचन को सुनकर ग्रहण करते है और फल लाकर दृढ़मसी ही बनते है। ***(मरकुस 4:13-20)*** *समझाओ कि परमेस्वर चाहता है की हम अच्छी मिट्टी की तरह बने और हम उनके वचन बाइबल पर विश्वास करे।* 4. *हम अच्छी मिट्टी की तरह कैसे हो सकते हैं? इस बारे में चर्चा करें कि बच्चों की सबसे पसंदी दादृष्टान्त कौन सा हैं? उसने इसे क्यों पसंद किया? उस दृष्टान्त से सबसे महत्वपूर्ण सबक क्या सीखा?* बाइबल टाइम पाठ को पूरा करें
सीखने	मुख्य पद को सिखाये और व्याख्या कीजिए। ***मरकुस 4:20***
याद करने	कहानी को संशोधित करने के लिए बच्चों को निम्नलिखित प्रश्न पूछें: 1. यीशु लोगों को कहाँ बैठकर सीखा रहा था? 2. किसान ने क्या किया? 3. पहली जमीन किस तरह की थी? 4. दूसरी जमीन किस तरह की थी? 5. तीसरी जमीन किस तरह की थी? 6. चौथा जमीन किस तरह की थी? 7. बढ़ती फसलों केलिए कौन से जमीन सबसे अच्छी थी? 8. बीज क्या प्रतिनिधित्व करता है?

B6 कहानी 1

युवा स्वप्नद्रष्टा - यह कहानी यूसुफ के अजीब सपनों के बारे में है।

	हम सीख रहे हैं कि: 1. यूसुफ के अपने भविष्य के बारे में एक अजीब सपना देखा। 2. परमेश्वर को यूसुफ के जीवन के लिए एक योजना था और हमारे जीवन के लिए भी उन्हें एक योजना है। **मुख्य पद : *उत्पत्ति 37: 8*** **बाइबल अनुभाग : *उत्पत्ति 37: 1-11***
पहचान कराने	यूसुफ के ग्यारह भाई थे। बच्चों से अपने भाइयों और बहनों के बारे में बताने के लिए कहें। इस बारे में चर्चा करें कि एक बड़े परिवार में रहना कैसे होगा।
सिखाने	1. यूसुफ के पिता याक़ूब कनान देश में रहते थे। यूसुफ 17 साल का था। वह अपने भाइयों को अपने पिता की भेड़ों की देखभाल करने में मदद करता था। एक दिन उसने भाईयों को कुछ गलत करते देखा। उसने अपने पिता को इसके बारे में बताया। ***(उत्पत्ति 37: 1,2)*** 2. याक़ूब अपने दूसरे बेटों की तुलना में यूसुफ को ज़्यादा पसंद करता था क्योंकि वह उसके बुढ़ापे का पुत्र था। इस्राएल ने यूसुफ को रंगबिरंगा अंगरखा बनवाया। जब यूसुफ के भाइयों ने यह देखा तो वे ईर्ष्या करने लगे। वे उससे नफरत करते थे ! ***(उत्पत्ति 37:3,4)*** *बच्चों के साथ 'ईर्ष्या' शब्द पर चर्चा करें। ईर्ष्या होने का मतलब क्या है? क्या आप ईर्ष्यालु है? भाईयों को यूसुफ से ईर्ष्या क्यों थी?* 3. यूसुफ ने एक सपना देखा। उसने सपना में देखा कि वह और उसके भाई खेतों में काम कर रहे थे और लोग खेत में पूले बाँध रहे थे। यूसुफ के पूला उठकर सीधा खड़ा हो गया और भाईयों के पूलों ने उसके पूले को चरों तरफ से घेर लिया और उसे दण्डवत किया। *4. बच्चों को समझाएं कि यह सपना यूसुफ का भविष्य में होने वाले कार्यों की ओर एक संकेत था। बच्चों से पूछें की सपने का मतलब क्या हो सकता है।* उसके भाइयों ने यूसुफ को उसके सपने और बातों के कारण ज़्यादा नफरत करने लगे। ***(उत्पत्ति 37: 5-8)*** 5. यूसुफ ने एक और सपना देखा जिसका अर्थ भी पहले सपने के समान था। इस बार उसने सूर्य, चंद्रमा और ग्यारह तारे उसे दण्डवत करते हुए देखा। इस बार उसके पिता भी उसे डाँटा और कहा, '... क्या सचमुच मैं और बेरी माता और तेरे भाई सब जाकर बड़े आगे भूमि पर गिरके दण्डवत करेंगें? ***(उत्पत्ति 37: 9,10)*** 6. यूसुफ के भाई उससे अधिक ईर्ष्या करने लगे लेकिन उसके पिता ने उस सपने के बारे में स्मरण रखा। ***(उत्पत्ति 37:11)*** *बच्चों से पूछिए कि यूसुफ के साथ भविष्य में क्या होगा? (सपने का मतलब था कि एक दिन वह अपने भाइयों पर शासन करेगा) उन्हें यह स्मरण दिलाएं कि परमेश्वर को शुरू से ही यूसुफ के जीवन के लिए एक योजना थी। परमेश्वर को हमारे जीवन के लिए भी एक योजना है।* बाइबल टाइम पाठ को पूरा करें
सीखने	मुख्य पद को सिखाये और व्याख्या कीजिए। ***उत्पत्ति 37: 8*** समझाएँ कि यूसुफ के भाइयों सपनों का अर्थ समझते थे। वे उससे ईर्ष्या करते थे और उसे नफरत करते थे।
याद करने	कहानी को संशोधित करने के लिए बच्चों को निम्नलिखित प्रश्न पूछें: 1. इस कहानी के समय यूसुफ कितने साल का था ? 2. याक़ूब ने यूसुफ को क्या उपहार दिया? 3. यूसुफ के भाइयों उससे ईर्ष्या क्यों करते थे? 4. ईर्ष्या क्या है? 5. क्या आपको लगता है कि ईर्ष्या होना सही है? 6. यूसुफ ने अपने पहले / दूसरे सपने में क्या देखा? 7. यूसुफ के सपनों का मतलब क्या था? 8. किसने शुरुआत से ही यूसुफ के जीवन की योजना बनाया था?

B6 कहानी 2

ना पसंद भाई - यह कहानी भाइयों द्वारा यूसुफ का बेचा जाने के बारें में हैं।

	हम सीख रहे हैं कि: 1. यूसुफ अपने भाइयों द्वारा गुलामी केलिए बेच दिया गया था। 2. हम परमेश्वर से हमारे पापों को छिपा नहीं सकते। **मुख्यपद :** ***गिनती 32: 23*** **बाइबल अनुभाग :** ***उत्पत्ति 37: 12-36***
पहचान कराने	बच्चों से पूछें कि अगर यूसुफ की तरह वह भी अपने माता-पिता केलिए काम - काज करते है। बच्चों को पिछली कहानी का याद दिलाना। यूसुफ के भाई उससे नफरत क्यों करते थे? आज की कहानी में, यूसुफ के पिता ने उससे घर से दूर अपने भाईयों और भेड़ बकरियों का हाल देखकर आने को कहा। ***(उत्पत्ति 37: 12-17)***
सिखाने	1. भाइयों ने यूसुफ को आते देखा। वे उससे इतना नफरत करते थे कि उन्होंने उसे मारने का योजना बनाया। फिर उसके सपनों का क्या होगा? उन्होंने अपने पिता को झूठ बोलने का फैसला किया की एक जंगली जानवर ने यूसुफ पर हमला किया था। ***(उत्पत्ति37:18-20)*** *ज़िक्र करना कि भाइयों ने सोचा था कि वे अपने पापों को छिपा सकते हैं और किसी को कभी भी कुछ पता नहीं चलेगा। परमेश्वर हमारे सारे गलतियों/ पापों के बारे में जानते हैं।* 2. यूसुफ के सबसे बड़े भाई रूबेन ने उन्हें ऐसा करने से रोका। इसके बजाय उन्होंने यूसुफ को जंगल में एक गड्ढे में फेंकने केलिए कहा। वह बाद में वापस आकर उसे बचाने की योजना बना रहा था। ***(उत्पत्ति37: 21-22)*** 3. जब यूसुफ वहा पहुंचे तो उन्होंने उसका रंगबिरंगा अंग रखा उतार लिया और उसे खाली गड्ढे में फेंक दिया। ***(उत्पत्ति 37:2-24)*** 4. इसके कुछ समय बाद, इश्माए लियों का एक दल सुगंधद्रव्य लेकर गिला दसे मिस्रजा रहे थे। उनमें से एक भाई, यहूदा, कुछ पैसे बनाना चाहता था।और उसने उसने सुझाव दिया कि यूसुफ को मारने के बजा यउसे इन लोगों को बेज देंगे। उन्होंने चांदी के 20 टुकड़ों केलिए यूसुफ को बेचा। यूसुफ को एक गुलाम बनाकर मिस्र लेजाया गया। ***(उत्पत्ति 37: 25-28)*** *गुलाम काम तलब क्या है? यूसुफ अब कैसे महसूस कर रहा होगा?* 5. भाई ने अपने करम को छिपाने की कोशिश की। उन्होंने युसूफ का रंग बिरंगा अंग रखा लाया और बकरी के खून में इसे डुबो दिया। फिर वह अंग रखा को अपने पिता के पास ले गया और पुछा अगर वह यूसुफ का था। याक़ूब ने अंग रखा को पहचाना। उन्होंने भी यह सोचा किए क भयंकर जानवर ने यूसुफ पर हमला किया और उसे मार दिया है। याक़ूब बहुत परेशान था और उसको कोई शान्ति नहीं मिला। ***(उत्पत्ति37: 29-35)*** 6. इस बीच यूसुफ मिस्र में जीवित था। उसे पोतीपर नामक फिरौन के एक हाकिम और अंग रक्षकों के प्रधान को बेचा गया था। ***(उत्पत्ति 37:36)*** *7. बच्चों को याद दिलाएं कि भले ही इस वक्त यूसुफ केलिए चीजें बहुत निराशा जनक दिख रहा है। लेकिन परमेश्वर की नियंत्रण अभी भी सब पर है।* बाइबल टाइम पाठ को पूरा करें
सीखने	मुख्य पद को सिखाये और व्याख्या कीजिए। ***गिनती 32: 23*** सुनिश्चित करें कि बच्चों को 'पाप' के अर्थ को समझते है और सारी पापियों दंडित होने के पात्र है। समझाओ कि परमेश्वर हमारे सभी पापों के बारे में जानता है और सभी पापों को दंडित किया जाना चाहिए। बच्चों को याद दिलाएं कि प्रभु यीशु हमारे पापों की सज़ा लेने केलिए क्रूस पर अपना प्राण दिया था।
याद करने	कहानी को संशोधित करने केलिए बच्चों को निम्नलिखित प्रश्न पूछें: 1. आज की कहानी की शुरुआत में याकूब ने यूसुफ को क्या करने केलिए कहा? 2. भाइयों ने यूसुफ के साथ क्या करने की योजना बनाई थी? 3. किस भाई ने यूसुफ को मारने के बजाय गड्ढे में डालने को सुझाव दिया? 4. कितने चांदी के सिक्को केलिए यूसुफ को भेजा था ? 5. भाइयों ने अपने पाप को कैसे छिपाया? 6. याकूब ने क्या सोचा कि यूसुफ के साथ हुआ था? 7. क्या परमेश्वर को पता था कि यूसुफ के साथ क्या हो रहा था? 8. परमेश्वर ने यूसुफ की भविष्य केलिए क्या योजना बनाया था?

B6 कहानी 3

ईमानदार कैदी - यह कहानी यूसुफ को बन्दीगृह में डालने के बारें में है।

	हम सीख रहे हैं कि: 1. यूसुफ बन्दीगृह में भी ईमानदार और मेहनती थे। 2. परमेश्वर यूसुफ के साथ थे। परमेश्वर हमें कभी नहीं छोड़ेंगे और हमें कभी निराश नहीं करेंगे। **मुख्यपद :** ***उत्पत्ति39: 21*** **बाइबल अनुभाग :** ***उत्पत्ति 39: 1-6, 19-23***
पहचान कराने	बच्चों से पूछें कि क्या वे कभी अपने परिवार से दूर रहे हैं। यह उन्हें कैसा लगा? संक्षेप में बच्चों को याद दिलाए कि यूसुफ अपने परिवार से कैसे निकल आया और कैसे पोतीपर ने उसे दास बनाने केलिए खरीदा। एक अलग देश में पहुंचने और एक गुलाम के रूप में काम करने केलिए बेचा जाने के बारें में यूसुफ ने कैसे प्रतिक्रिया व्यक्त किया होगा?
सिखाने	1. यूसुफ को मिस्रमें लाया गया था और पोतीपर नामक एक आदमी के गुलाम के रूप में बेचा गया था। पोतीपर, फिरौन के एक हाकिम और अंगरक्षकों के प्रधान था। पोती परने देखा कि यूसुफ ईमानदार औरमेहनती थे। वह जानता था कि यहोवा यूसुफ के साथ था और उसने उसे अपने घर का अधिकारी बनाया। ***(उत्पत्ति39: 1-4)*** 2. जब से पोती पर ने यूसुफ को अपने परिवार के अधिकारी रखा तब से परमेश्वर ने उसके घर पर आशीर्वाद देने लगा। पोतीपर को अपने खाने की रोटी को छोड़ किसी और चीज़ के बारें में चिंता करन` की ज़रूरत नहीं थी। ***(उत्पत्ति 39: 5-6)*** *बच्चों को याद दिलाएं कि यहोवा यूसुफ के साथ थे और उनके देखभाल कर रहे थे।* 3. एक दिन पोतीपर की पत्नी ने यूसुफ पर झूठा आरोप लगाया। उसने यूसुफ के बारें में पोतीपर से झूठ बोला। पोतीपर अपनी पत्नी की बातपर विश्वास किया। पोतीपर बहुत ही गुस्से में यूसुफ को बंदीगृह में डाल दिया, जब कि वह निर्दोश था। ***(उत्पत्ति39: 19,20)*** *क्या यहोवा यूसुफ को भूल गए थे?* 4. लेकिन यहोवा अभी भी यूसुफ के साथ थे और बन्दीगृह में भी उसके लिए परवाह कर रहा था। बंदीगृह में भी यूसुफ ईमानदारी और कड़ी मेहनत जारी रखा। यह देखकर दरोगा ने यूसुफ को सारी बंधियों का अधिकार यूसुफ को दिया। जो कुछ यूसुफ करता था, यहोवा उसको उसमे सफलता देता रहा। ***(उत्पत्ति 39: 21-23)*** *5. कहानी के इस हिस्से में यूसुफ ने दिखाए अच्छे गुणों का सारांश बताएं। यूसुफ केलिए यहोवा को इनकार करना आसान था लेकिन वह यहोवा को प्रसन्न करता रहा। यहोवा यूसुफ को भविष्य में आनेवाल` ज़िम्मेदारियों केलिए तैयार कर रहा था। वह यूसुफ को भूले नहीं थे और कभी उसे निराश नहीं करेंगे।* बाइबल टाइम पाठ को पूरा करें
सीखने	मुख्यपद को सिखाये और व्याख्या कीजिए। ***उत्पत्ति 39: 21*** बच्चों को समझाएं कि कभी-कभी हमारे लिए परमेश्वर की योजना में मुश्किल समय भी शामिल हो सकते हैं। लेकिन परमेश्वर हमें प्यार करता है और बुरे वक्त में भी हमारे साथ है।
याद करने	कहानी को संशोधित करने केलिए बच्चों को निम्नलिखित प्रश्न पूछें: 1. यूसुफ को किस देश में ले जाया गया था? 2. यूसुफ को किस ने खरीदा? 3. पोतीपर का काम क्या था? 4. पोतीपर ने यूसुफ को अपने परिवार के अधिकारी क्यों रखा था? 5. यूसुफ को बंदीगृह में क्यों डाला गया? 6. क्या यूसुफ बन्दीगृह में होने के योग्य था? 7. यूसुफ की सफलता के कारण कौन था? 8. यहोवा ने यूसुफ को बंदीगृह जाने क्यों दिया?

B6 कहानी 4

नया नेता - यह कहानी यूसुफ मिस्र का प्रधानमंत्री बनाए जाने के बारें में है।

	हम सीख रहे हैं कि: यूसुफ मिस्र के देश में प्रधानमंत्री बना। यहोवा ने इस विशेष नौकरी केलिए यूसुफ को तैयार किया था। **मुख्यपद :** ***1 कुरिन्थियों 10:13*** **बाइबल अनुभाग :** ***उत्पत्ति 41: 14-49***
पहचान कराने	बच्चों से पूछें कि क्या कभी वह एक पेची दासपना देख कर जाग उठा है? तब उन्हें कैसा लगा था? इस कहानी में, मिस्र के राजा, फ़िरौन, ने दो सपने देखे थे जिन्हें वह समझ नहीं पा रहा था। वह उनका मतल बजान ना चाहता था। उसका मदद कौन कर सकता है?
सिखाने	1. फिरौंन ने दो पेची देसप ने देखा था। वह इसका मतलब जानना चाहता था। उसके पहले सपना में उसने नील नदी से निकल ते सात गायों को देखा। फिर उसने सात दुर्बल गायों को भी निकल ते हुए देखा। फिर दुर्बल गायों ने मोटी गायों को खा लिया लेकिन वे पहले की तरह दुर्बल ही रही ! फिर उसने दूसरा सपना देखा जिस मे सात अच्छी और अन्न से भरी बाले और सात मरझाई बालें थे। दुर्बल बालें ने मोटी बालें को खा लिए। फिरोंन ने मिस्र के सब ज्योतिषियों और पण्डितों से पुछा लेकिन वे बता नहीं सका। ***(उत्पत्ति 41: 1-8)*** *2. बच्चों से सपने की मतलब के बारें में पूछें। परमेश्वर ने फिरौन कोइ न सपने दिखाए थे। इसलिए केवल वह ही जवाब प्रदान कर सकता था।* 3. फिरौन ने यूसुफ को बुलवा भेजा। यूसुफ को बंदीगृह से निकाल निकालकर फिरौन के पास लाया गया। उसने फिरौन से कहा कि यहोवा उसके सपनों के अर्थ की व्याख्या करने में उनकी मदद करेंगे। ***(उत्पत्ति 41: 14-24)*** 4. परमेश्वर ने यूसुफ को सपनों काम तलब बताया फिर यूसुफ ने फ़िरौन को उसका मतलब बताया। सात मोटी गायों और अन्न से भरी सात बालों काम तलब था कि सात साल तक अच्छी फसल होगी सभी को खाने केलिए बहुत होगा। लेकिन, सात दुर्बल गायों और मुरझाई हुई सात बालों काम तलब सात साल कि भुख मरी थी। अकाल इतना बुरा होगा कि हर कोई सात साल के भर मार के बारे में भूल जाएगा। ***(उत्पत्ति 41: 25-32)*** 5. यूसुफ ने सुझाव दिया कि फ़िरौन देश पर अधिकारीयों को नियुक्त करें और सुकल के सात वर्ष में सब भोजन वस्तु इकट्ठा करें और नगर के भण्डार घर में रखे ताखि अकाल के उन सात वर्षों में लोगों को भोजन मिले। यह बात फ़िरौन को अच्छी लगी। वह जानता था की परमेश्वर यूसुफ के साथ है।और वह समझदार और बुद्धिमान था। फ़िरौन ने यूसुफ को सारे मिस्र का अधिकारी बनाया। मिस्र में केवल फिरौन ही यूसुफ़ से बड़ा / शक्तिशाली था। ***(उत्पत्ति 41: 33-45)*** 6. सुकाल के सातों वर्ष में यूसुफ मिस्र का दौरा किया और सब प्रकार के भोजन वस्तुएं जमाकर के नगरों में रकता गया ताकि अकाल के दिनों में उसका उपयोग किया जा सके। ***(उत्पत्ति 41: 46-49)*** *7. यहाँ तक की यूसुफ की जीवन के बारें में बच्चों को याद दिलाएं। चर्चा करें कि यह प्रारंभ से परमेश्वर की योजना था। परमेश्वर यूसुफ के प्रति विश्वासयोग्य रहे थे। परमेश्वर ने कभी भी यूसुफ़ को अकेला नहीं छोड़ा। यूसुफ के जीवन की सभी कठिन समय उपयोग करके परमेश्वर इस महत्वपूर्ण भूमि का केलिए उन्हें तैयारकर रहा था। परमेश्वर ने अकाल के दौरान बहुत से लोगों को बचाने केलिए यूसुफ का इस्तेमाल किया था।* बाइबल टाइम पाठ को पूरा करें
सीखने	मुख्यपद को सिखाये और व्याख्या कीजिए। ***1 कुरिन्थियों 10:13 - 'परमेश्वर सच्चा है'***। बच्चों को सच्चा शब्द का मतलब समझाए।
याद करने	कहानी को संशोधित करने केलिए बच्चों को निम्नलिखित प्रश्न पूछें: 1. फ़िरौन ने यूसुफ को बुलावा क्यों भेजा? 2. पहली सपने में गायों को क्या हुआ? 3. यूसुफ को सपने का अर्थ किसने बताया? 4. सपनों का मतलब क्या था? 5. अकाल के समय यूसुफ का विशेष काम क्या था? 6. परमेश्वर यूसुफ केलिए सच्चा कैसे था?

पाठ को अंकन करने शिक्षको केलिए मार्गदर्शन

लेवल 1 पाठः

- हर हफ्ते एक/दो पन्ने को मुख्य रूप से रंग भरने या सवालों के जवाब देने।
- हर हफ्ते 10 अंक निर्धारित किए है और एक महीने में अधिकतम 40 अंक।
- लेवल 1 के बच्चों को अक्सर पढने में तकलिफ हो सकता है इसलिए हम चाहते है कि माता-पिता/ रक्षक/शिक्षक उनके सहायता करे।
- हम हर सवाल केलिए 2 अन्क निर्धारित किए है और शेष अन्क रंग भरने केलिए ऐक अध्याय केलिए 10 अन्क।

लेवल 2 पाठः

- हर हफ्ते 4 पन्ने।
- कहानी पाठ में ही निहित है। बच्चों को पहेली सुलझाने, रंग भरने, मुख्य पद को पूरा करना है।
- 20 अन्क हर हफ्ते केलिए निर्धारित है और एक महीने केलिए अधिकतम 80 अन्क।

बाइबल टाइम के मार्किन्ग

निर्देशः

शिक्षक पहलेः

- पाठ को जाँच कर चिन्हित करे।
- निर्देश अनुसार आवश्यक अन्क है।
- गलत जवाब के पास चिन्हित करे और सही जवाब भी लिखे।
- आन्शिक रूप से सही उत्तर केलिए एक अन्क दे।
- एक महीने के कुल अन्क के दिए हुए जगह में लिखो।

© Bible Educational Services 2020
www.besweb.com